मासिक

वर्ष 41, अंक 02, अगस्त 2005, मूल्य 05.50
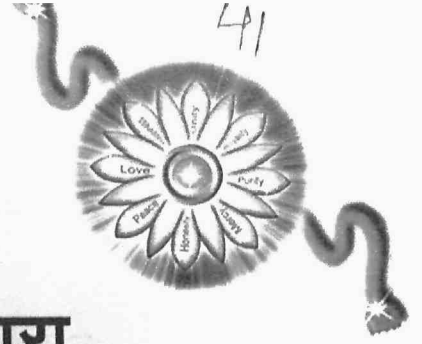
आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना अभियान (2005-06)

अहिंसा
पवित्रता
नम्रता
ईमानदारी
प्रेम
एकता
सहयोग
समरसता
सत्यता
सहनशीलता
करुणा
सम्मान
शान्ति
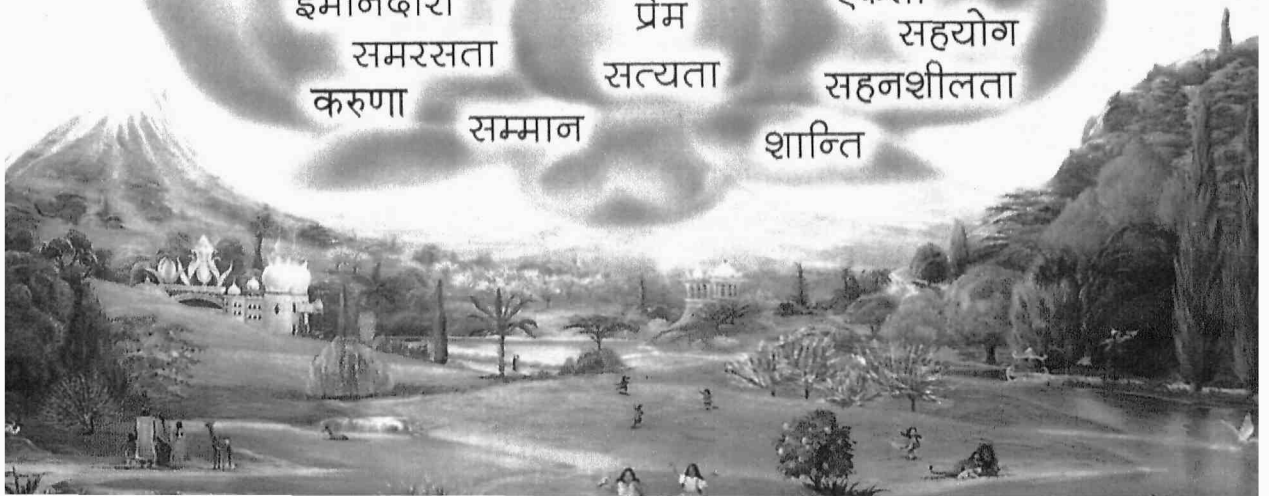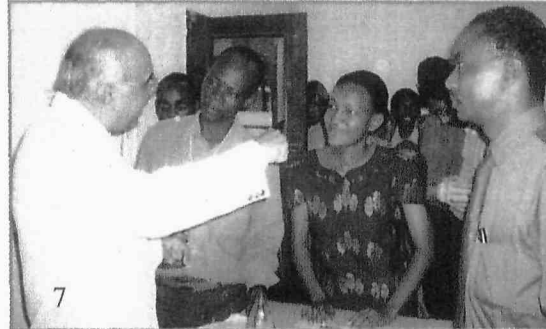
1. रायपुर- मातेश्वरी जी की 40वीं पुण्य तिथि पर आयोजित समारोह में दिव्य उद्बोधन समारोह को सम्बोधित करते हुए छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम भ्राता के.एम. सेठ जी, मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. कमला बहन, प्रथम महिला बहन वीणा सेठ तथा ब्र.कु. सरिता बहन । **2. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)-** ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित परिचर्चा तथा राजयोग रिट्रीट कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राजू भाई, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. शारदा बहन, ज़िला पंचायत मुख्य तथा मुख्य सलाहकार दमण एवं दीव बहन तरुना एल.पटेल, जी.एन.एफ.सी. के कार्यकारी निदेशक भ्राता दीपक टौंक, ब्र.कु. सुरेखा बहन तथा ब्र.कु. निर्वैर भाई । **3. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)-** युवा प्रभाग द्वारा आयोजित सेमिनार का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. चन्द्रिका बहन, बाबा साहब अम्बेडकर विश्वविद्यालय की कुलपति भगीनी आम्रपाली मरचन्ट जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, डॉ. भ्राता शेखावत जी, राजस्थान की राज्यपाल महामहिम बहन प्रतिभा पाटिल जी, राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी तथा भ्राता महेन्द्र पटेल जी । **4. कुरुक्षेत्र-** ईश्वरीय संदेश प्राप्त करने के पश्चात् भ्राता फूलचन्द मुलाना जी, ब्र.कु. सरोज बहन, ब्र.कु. लक्ष्मण भाई तथा अन्य के साथ समूह चित्र में । **5. आबू पर्वत-** हिमाचल के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री भ्राता जगत प्रकाश नड्डा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी । **6. पणजी (गोवा)-** स्वच्छ, स्वर्णिम ग्राम्य भारत कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गोवा के कपड़ा मंत्री भ्राता दयाचन्द नार्वेकर, सरपंच भाई, ग्राम सेविका तथा ब्र.कु. शोभा बहन । **7. तंजानिया-** मुहिम्बिली विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विज्ञान कॉलेज के डीन प्रो. भ्राता मैकोनी तथा विद्यार्थियों से बात करते हुए डॉ. भ्राता गिरीश पटेल जी । **8. नवसारी-** यातायात प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुजरात के आदि जाति विकास तथा समाज कल्याण मंत्री भ्राता मंगु भाई पटेल, ब्र.कु. दिव्या बहन, ब्र.कु. स्वामी नाथन भाई, आर.टी.ओ. इंसपेक्टर भ्राता खीमसुरिया जी, ब्र.कु. सुरेश भाई, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य ।

सम्पूर्ण पवित्र एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री कृष्ण

कहावत प्रसिद्ध है कि "ज्ञान द्वारा नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी पद प्राप्त होता है।" परन्तु आज लोगों को यह मालूम नहीं है कि श्री कृष्ण ने वह देव पद कैसे प्राप्त किया था। विचार करने पर आप मानेंगे कि किसी को राज्य-भाग्य अथवा धन-धान्य या तो दान-पुण्य करने से या यज्ञ करने से या युद्ध द्वारा शत्रु राजा को जीतने से ही प्राप्त होते हैं। परन्तु श्री कृष्ण को जो राज्य-भाग्य अथवा धन-धान्य प्राप्त था, वह कोई साधारण, विनाशी या सीमा वाला न था बल्कि अलौकिक, अखुट, उत्तम, अविनाशी, असीम, अखण्ड तथा सम्पूर्ण और पवित्र था, तभी तो आज तक दूसरे राजा-महाराजा भी श्री कृष्ण अथवा श्री नारायण की भक्ति-पूजा करते हैं। अत: प्रश्न उठता है कि श्री कृष्ण ने कौनसा यज्ञ, कौन-सा दान-पुण्य अथवा कौन-सा युद्ध किया था जिसके फलस्वरूप उनको ऐसा सर्वोत्तम, दो-ताजधारी पूज्य देव पद (Double-crowned Deity Status) प्राप्त हुआ कि जिसका आज तक गायन-वन्दन है? परमपिता परमात्मा शिव ने अब इसके विषय में समझाया है कि श्री कृष्ण ने प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में ईश्वरीय ज्ञान धारण करके, 'ज्ञान यज्ञ' रचा था। उन्होंने अपना तन, मन और धन सम्पूर्ण रीति से उस यज्ञार्थ 'ईश्वरार्पण' कर दिया था। उन्होंने अपना जीवन मनुष्यमात्र को ज्ञान-दान देने में लगा दिया था और जन-मन को परमपिता परमात्मा से योग-युक्त करने तथा उन्हें सदाचारी बनाने में व्यतीत किया था। उन्होंने

शेष पृष्ठ.....28 पर

अमृत-सूची

- संग्रह मूल्यों का (सम्पादकीय) 2
- रक्षा बंधन – व्यवहारिक, ऐतिहासिक तथा शास्त्रीय दृष्टि से 5
- सचाई का पथ (कविता) 6
- पुरुषोत्तम संगमयुग एवं विश्व में एक राज्य 7
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 10
- ईश्वरीय वरदान ने बनाया निर्भय 11
- मूल्यनिष्ठ रक्षा बंधन (कविता) 13
- हृदय रोग – एक सफल रूहानी शोध 14
- एकाग्रता की शक्ति 16
- स्वाधीनता – सपना या सच्चाई 18
- वेद चिंतन 20
- एक पत्र – शरीर के नाम 23
- भाग्यविधाता ने मुझे कौड़ी से हीरा बना दिया 24
- करनकरावनहार की कमाल .. 27
- सचित्र सेवा समाचार 29

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	65/-	1,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	65/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	600/-	6,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	600/-	6,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–

09414423949, 09414154383

सम्पादकीय ....

संग्रह मूल्यों का

संग्रह शब्द का अर्थ इकट्ठा करना है परन्तु जब हम इसका सन्धिच्छेद करते हैं तो कुछ अन्य अर्थ भी सामने आता है। संग्रह = सम् + ग्रह, इसमें प्रयुक्त 'सम' उपसर्ग कई अर्थों में प्रयुक्त होता है। सम् का अर्थ है समान अर्थात् हम आत्मा और शरीर दोनों के लिए समान रूप से ग्रहण करें, एक की भी उपेक्षा न करें। सम् शब्द का दूसरा अर्थ है एकरस अर्थात् हम संसार के पदार्थों को इस तरह ग्रहण करें कि मन की स्थिति एकरस रहे। लेकिन आज की स्थिति में तो संग्रह शब्द मात्र ग्रहण करने और एकत्रित करने का ही पर्यायवाची बन गया है और उससे पहले लगे उपसर्ग 'सम्' के अर्थ को अर्थहीन कर दिया गया है। आज संग्रह का अर्थ यही नज़र आता है कि जैसे कैसे भी, टेढ़ी उंगली करके भी, मन का सन्तुलन बिगाड़ कर भी बस संग्रह करो। लोभवश, तृष्णावश जो अनावश्यक संग्रह किया जा रहा उसके कारण सद्गुण छू मन्तर हो रहे हैं और अनेकों को सुख से दाना-पानी प्राप्त करना दुभर हो रहा है। आज संग्रह किया जाता है सोने-चाँदी का, कपड़े-लत्ते का, अनाज और दाल का, चप्पल और जूतों का, यहाँ तक कि रोड़ी, ईंट, पत्थर का भी संग्रह किया जाता है क्योंकि कलियुगी महाराज की नित-नित बढ़ती महँगाई के चमत्कार ने इन कंकरों, पत्थरों, ईंटों को भी हीरे-मोतियों का भाव दे दिया है।

संग्रह की हवस

आज का मानव काला बाज़ारी करने में एड़ी से चोटी तक कालिख में पुतता जा रहा है। सफ़ेद चद्दर या गद्दी पर, सफ़ेद कपड़े पहन कर, सफ़ेद बाल और दाढ़ी लिए होने पर भी संग्रह की हवस ने उसको भीतर से बिल्कुल ही काला कर दिया है। लूट कर, खसोट कर, शस्त्रों का खौफ़ दिखा कर एकत्रित करने वालों के काले कारनामों से तो इतिहास भरा पड़ा है और साथ ही उस लूटे हुए माल को अपनी आँखों के सामने, अन्यों को हस्तान्तरित होते देखने की अनकही पीड़ा भोगने का इतिहास भी हमने पढ़ा है। शताब्दियों पहले केवल सिकन्दर, औरंगज़ेब, महमूद गजनवी ने ही ऐसा कष्ट भोगा हो, ऐसा नहीं है। उनके जाने के बाद भी, उनकी गफलतों और गलतियों से भिज्ञ होते हुए भी अनेक लोगों ने वैसी ही ख़ता खाई है और आज तो उन जैसों का एक विशाल काफिला खड़ा हो गया है। अन्तर केवल इतना है कि सिकन्दर आदि का खंजर प्रत्यक्ष था और आज के तथाकथित सिकन्दरों का खंजर गुप्त है। परन्तु लूटने, संग्रह करने की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

तृष्णा सदा तरुण

व्यक्ति को भूख लगती है तो वह खाने के पदार्थों को एकत्रित करना प्रारम्भ कर देता है। लेकिन इस भूख की एक सीमा है, यह भड़कती है पर फिर शान्त भी हो जाती है और कई घण्टों तक शान्त हो जाती है। वृद्धावस्था के आगमन के साथ-साथ इस भूख की मात्रा भी कम होती जाती है परन्तु संग्रह की भूख का न समय है न सीमा, न शान्त होती है न तृप्त। हर घड़ी हर पल भड़की रहने वाली इस भूख का शमन प्रकृति अपना सारा वैभव लुटा कर भी नहीं कर पाती और वृद्धावस्था के आने के बाद इसका शमन हो जाएगा, ऐसा भी निश्चित नहीं है। ''तृष्णा सदा तरुण'' की कहावत के अनुसार वृद्धावस्था में संग्रह की भूख तीव्रतर और तीव्रतम होती देखी जा सकती है। अनेक चिन्तकों ने अपने उत्कृष्ट विचारों से इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की प्रेरणा दी है। महात्मा गाँधी के अनुसार – ''जिन चीज़ों की पूरे जगत को ज़रूरत है उन पर कब्जा रखना हिंसा है।'' रहीम जी का सुन्दर दोहा है –

''जो जल बाढ़े नाव में
घर में बाढ़े दाम,
दोऊ हाथ उलिचिए
यही सयानो काम।''

जैसे नाव में जल बढ़ जाने पर, समझदारी इसी में है कि दोनों हाथों

से उसे बाहर निकाल दिया जाए , उसी प्रकार घर में धन बढ़ जाने पर उसे भी दोनों हाथों से पुण्य कार्यों में लगा देना चाहिए।

सफल करो

भगवान कहते हैं – सफल करो तो सफलना मिले। धन-वैभवों की चकाचौंध से भरे संसार सागर में मानव योग रूपी नाव में बैठ कर ऊपर-ऊपर तैरता रहे, न्यारा और उपराम रहे, इसी में शोभा है।जैसे सफर में अनाज को उठाना और उससे काम की चीज़ें खरीदना मुश्किल है पर पैसे को उठाना और उससे लेन-देन करना बहुत ही सरल है। आत्मा भी यात्री है, इस शरीर को छोड़ कर, अगले जन्म में इसे नया शरीर लेकर फिर पार्ट बजाना है। तो समझदारी इसी में है कि संग्रहित वस्तुओं को सफल कर पुण्य एकत्रित किया जाए। करन्सी, सोना, चाँदी आदि आत्मा उठा नहीं सकेगी इसलिए सोने को, धन को श्रेष्ठ कार्यों में लगा कर उसे पुण्य में बदल लें। वह पुण्य इतना हल्का होगा जिसे आत्मा उठा सकेगी तथा साथ ले जा सकेगी।

आजकल कम्प्यूटर के द्वारा किसी भी सन्देश या चित्र को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचा देते हैं। जब सन्देश को डाला जाता है तो उसके अक्षर या चित्र तरंगों में बदल जाते हैं। ये सूक्ष्म तरंगें अगले कम्प्यूटर में जाते ही पुन: अक्षरों में या दृश्यों में बदल जाती हैं। इसी प्रकार, इस शरीर द्वारा हमने जो कमाया, जो अर्जित किया, संग्रह किया उसको यदि हम ईश्वरीय कार्य में लगाते हैं तो हमारा स्थूल अर्जन भी आध्यात्मिक तरंगों में बदल जाता है और अगले जन्म का नया शरीर प्राप्त होते ही कई गुणा सुख-साधन, सामग्री बन कर हमें मिल जाता है।

यदि कोई बीज का संग्रह कर ले, उसे बोए नहीं तो दो प्रत्यक्ष नुकसान दिखाई देते हैं। एक तो बीज नष्ट हो जाएगा, दूसरा उससे मिलने वाली पैदावार से व्यक्ति वंचित रह जाएगा। मानव के पास तन, मन, धन की जो शक्तियाँ हैं, ये भी सूक्ष्म बीज हैं जिन्हें ईश्वरीय कार्य में लगा कर वह इन बीजों से पदम गुणा भाग्य बना सकता है। नहीं तो ये मानवीय शक्तियाँ मन को उलझाएँगी, समय आने पर छूट जाएंगी और इनसे होने वाली पदमगुणा प्राप्ति से हम वंचित रह जाएँगे। अत: संग्रह नहीं सफल करो। **सफल का अर्थ है फल सहित। आप जो सेवा में सफल करेंगे वह फल सहित आपको मिलेगा। सफल करना माना पाना, संग्रह करना माना गँवाना।**

जब हम संग्रह करते हैं, आवश्यकता से ज़्यादा इकट्ठा करते हैं, बहुत बैंक-बेलेन्स बनाते हैं, घर के कई कोनों में कई प्रकार की चीजें रखते हैं जिनमें ममत्व भरा रहता है तो वे चीज़ें बुद्धि की स्मृति को घेर कर हमें स्मृतिस्वरूप नहीं बनने देती हैं। जैसे यदि किसी सी.डी. (Compact Disk) की योग्यता 4 लाख शब्दों की हो और उसमें 3 लाख व्यर्थ बातें भरी हों तो काम की बातें केवल 1/4 होंगी। इसी प्रकार, बुद्धि भी सी.डी. है। इसका 3/4 हिस्सा यदि विलासिता की वस्तुओं की स्मृति से भरा है तो ज्ञान की बातें, आध्यात्मिकता की बातें, ईश्वरीय बातें, श्रीमत की बातें बुद्धि में कहाँ समाएँगी। **नश्वर चीज़ों में मेरा-मेरा है तो प्यारे बाबा को मेरा कैसे मानेंगे? भगवान के अति सूक्ष्म रूप को मेरा कहने की मेहनत बुद्धि क्यों करेगी? दैत्याकार स्थूल चीज़ें प्रिय हैं तो सूक्ष्माकार निराकार प्रिय कैसे लगेगा**।इसलिए समझदार आदमी को दैत्याकार कलियुगी चीज़ों से ममत्व निकाल अर्थात् स्थूल आँखों को खींचने वाली चमकदार, लुभावनी चीज़ों से ममत्व निकाल, वास्तविक सुन्दरता के मालिक सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् में मन लगाना चाहिए। बुद्धि रूपी सी.डी. में से जितनी मात्रा में संग्रह और संग्रह के प्रति ममत्व निकलता जाएगा उतनी मात्रा में भगवान के प्रति प्यार बढ़ता जायेगा।

कहा जाता है – **''स्वदेशे पुज्यन्ते राजा विद्वान तु सर्वत्र पुज्यन्ते।'**राजा की पूजा अपने देश में होती है पर विद्वान (गुणवान) तो सर्वत्र पूजा जाता है। राजा अर्थात् सम्पत्ति के मालिक को उसके जान-पहचान के दायरे में ही मान-सम्मान मिलता है परन्तु जो गुणवान है वह अपने गुण, सद्व्यवहार, सम्मान,

दया आदि के बल से सारे विश्व में पूजा जाता है। वह गुणों के बल से किसी को भी अपना बना सकता है। धन को उठाना, सम्भालना पड़ता है परन्तु गुणों का कोई बोझ नहीं। वे तो आत्मा में उसी प्रकार नूँधे हुए हैं जैसे फूल में खुशबू। इसलिए हे मानव, संग्रह करना ही है तो गुणों का, ज्ञान का, शक्तियों का संग्रह कर, जो तेरे सखा-सखी बन शाश्वत यात्रा तक तेरे साथ चलेंगे। जो तेरे मार्ग की बाधाओं को बुहारी बन, कष्ट पहुँचने से पहले ही बुहार देंगे। गुणों का संग्रह भगवान के दिलतख्त पर जगह दिलवाता है, वक्त की धूल में भी चरित्र की चमक को बनाए रखता है और जीवन-यात्रा में निश्चिन्तता का रंग भरता है।

संग्रह शब्द का जब उच्चारण करते हैं तो यह जो ध्वनि देता है उसका एक अर्थ संग + रह भी निकलता है जिसका अर्थ है सदा साथ रहने वाली वस्तु। सदा साथ रहने वाले तो मूल्य ही हैं क्योंकि शरीर छूटने के साथ ही आत्मा का स्वामित्व धन तथा भौतिक साधनों पर से समाप्त हो जाता है। सद्गुण और मूल्य ही ऐसी ईश्वरीय अमानत हैं जो सदा आत्मा के साथ रहती हैं, रक्षक और साथी बन उसका साथ निभाती हैं, चरित्र को उज्ज्वल करती हैं, व्यक्ति को माननीय और पूजनीय बनाती हैं। गुणों से सुसज्जित व्यक्ति का शरीर, पाँच तत्वों में विलीन होने के बाद भी मनुष्यात्माओं के दिलों में जगह बना लेता है, उसकी यादगार सदियाँ गुज़रने तक भी दिलों में तरोताजा रहती है और प्रेरणा का स्रोत बनती है। भारत के मन्दिरों में जिन देवी-देवताओं की पूजा होती है, वे मूल्यों की मूर्त होने के कारण ही आधा कल्प से पूजे जाते आ रहे हैं। आधा कल्प अर्थात् 2500 वर्ष गुज़र जाने पर भी वक्त की धूल उनकी यादों को मिटा नहीं पाई है।

भारतीय समाज प्राचीनकाल से मूल्यों में आस्था रखता आया है। यहाँ का अशिक्षित समाज भी मूल्यों की भाषा बखूबी समझता है। यही कारण है कि ग्रामीण अंचलों में भी गरीब, अनपढ़ लोगों की संस्कृति में दया, करुणा, सहयोग, प्रेम के किस्से भरे पड़े हैं। वर्तमान भौतिक दौड़ में पदार्थों के संग्रह में मन-बुद्धि को उलझा कर मानव अविनाशी रूप से संग रहने वाले जिन मूल मूल्यों का लाभ उठाने में लापरवाह हो रहा है, जिन मूल्यों की शीतल छाया में रह कर तन-मन को शीतल, शान्त करने और अमन-चैन की अनुभूति से दूर जाने की त्रासदी भोग रहा है, उस मानव को पुन: मूल्यों की छत्रछाया में सुरक्षित रखने के लक्ष्य से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस वर्ष '**आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना**' इस विषय के अन्तर्गत सम्पूर्ण मानव जगत को मूल्यों की जागृति देने के लिए कृत संकल्प हुआ है। सोलह कला सम्पूर्ण बनाने के लिए जिन मूल्यों को चुना गया है, वे हैं – पवित्रता, शान्ति, सहनशीलता, करुणा, प्रेम, सम्मान, नम्रता, उदारता, एकता, ईमानदारी, सहयोग, अहिंसा, दिव्यता, साहस, मधुरता तथा समरसता। इन मूल्यों को लेकर हम द्वार-द्वार जाकर मानव को, विस्मृत देवत्व स्मरण करने की दिशा दिखायेंगे। जिस प्रकार एक रंग में दूसरा, तीसरा रंग डालकर कितने ही अन्य नये-नये रंग निर्मित किये जा सकते हैं, उसी प्रकार इन मुख्य 16 मूल्यों की धारणा से अन्य अनेक सकारात्मक कलाएँ तथा मूल्यों की धारणा स्वत: हो जाती है। जिस प्रकार रंगों का मूल स्रोत श्वेत रंग है उसी प्रकार ईश्वरीय स्मृति तथा ईश्वरीय ज्ञान ही सर्व गुणों और मूल्यों के मूल स्रोत हैं। इसके लिए ईश्वर से योग लगा कर राजयोगी बनने की तथा उनके दिए ज्ञान को सीख कर, भाई-भाई की दृष्टि अपना कर पवित्रता धारण करने की आवश्यकता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि योगी बनो, पवित्र बनो – इस ईश्वरीय संदेश की धारणा से हम, 16 मूल्यों तथा इनके मीठे रक्षा-कवच में आधिक, भौतिक, दैविक तापों से सदा सुरक्षित रह, रामराज्य, ईश्वरीय राज्य, दैवी राज्य, सतयुगी राज्य को भारत भूमि पर अवश्य साकार कर दिखायेंगे।

–ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

रक्षाबंधन
व्यवहारिक, ऐतिहासिक तथा शास्त्रीय दृष्टि से

रक्षाबन्धन एक बहुत विलक्षण त्योहार है। यद्यपि मनुष्य को स्वभाव से ही कोई बन्धन अच्छा नहीं लगता फिर भी 'रक्षाबन्धन' बड़ी खुशी से बाँधा और बँधवाया जाता है। आइए, इस उत्सव के वास्तविक रहस्य पर विचार करें।

राखी की प्रचलित प्रथा पर विचार

आजकल रक्षाबन्धन का उत्सव बहनों द्वारा अपने भाइयों को राखी बाँधकर हर वर्ष उन्हें अपने संरक्षण के उत्तरदायित्व की स्मृति दिलाने के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। देखा जाए तो इस पर्व का यह काफ़ी सीमित-सा रूप है। इस पर व्यवहारिक, ऐतिहासिक एवं शास्त्रीय दृष्टिकोण से विचार करें तो कई प्रश्न उठते हैं।

व्यवहारिक पक्ष

व्यवहारिक रीति से नारी, मूलत: कन्या के रूप में अपने पिता पर और विवाह के पश्चात् पत्नी के रूप में अपने पति पर निर्भर होती है। तब भला भाई द्वारा संरक्षण का इतना महत्त्व क्यों? पुनश्च प्रचलित प्रथा के अनुसार राखी तो एक बड़ी बहन अपने नन्हें से भाई को, एक धनवान बहन अपने ग़रीब भाई को, एक परदेस में रहने वाली बहन अपने दूर-देशीय भाई को तथा अनेक बहनें अपने इकलौते भाई को भी राखी बाँधती या भेजती हैं। इन परिस्थितियों में भाई न तो बहनों की आर्थिक सहायता कर सकते हैं और न ही उनकी लाज की रक्षा।

ऐतिहासिक पक्ष

ऐतिहासिक दृष्टि से भी राखी की प्रचलित प्रथा परम्परागत नहीं लगती। भला यह मानना कहाँ तक उचित होगा कि नारी आदि काल से अबला रही है? विचार करें कि दुर्गा, अम्बा, काली इत्यादि शक्तियाँ जिनसे भक्तजन आज तक सुरक्षा की कामनाएँ करते हैं उन्हें भला किसके संरक्षण की आवश्यकता रही होगी? सृष्टि के आदिकाल अर्थात् सतयुग में न तो धन-सम्पत्ति की कमी थी और न ही नारी की लाज को कोई ख़तरा था। नर और नारी दोनों के अधिकार समान थे। इस बराबरी के स्मरण चिह्न आज भी उन मूर्तियों तथा चित्रों के रूप में मिलते हैं। जिनमें सतयुगी विश्व महाराजन् श्री नारायण और विश्व महारानी श्री लक्ष्मी को सिंहासन पर एक साथ विराजमान दिखाते हैं। 'यथा राजा तथा प्रजा' की उक्ति के अनुसार उस काल की सभी नारियाँ सम्मानित तथा सुरक्षित थीं। दूसरे, अभी से कुछ समय पूर्व तक भी पुरोहितों अथवा ब्राह्मणों द्वारा अपने यजमानों को राखी बाँधकर तिलक लगाने की प्रथा प्रचलित थी। इसी तरह युद्ध के मैदान में जाने वाले योद्धाओं को भी नारियाँ राखी बाँधती थीं। इतिहास में हिन्दू नारियों द्वारा मुसलमानों को भाई बनाकर राखी भेजने के उदाहरण मिलते हैं। इन वृत्तान्तों से स्पष्ट होता है कि रक्षा बन्धन केवल शारीरिक नाते के बहन-भाइयों का त्योहार नहीं है। इसका भावार्थ कहीं अधिक विस्तृत है।

शास्त्रीय पक्ष

राखी के विषय में एक शास्त्र कथा तो यह है कि यम ने अपनी बहन यमुना से राखी बँधवाते हुए यूँ कहा था कि इस पवित्रता के बन्धन में बँधने वाला, यमदूतों के भय से छूट जायेगा। एक अन्य शास्त्र कथा के अनुसार जब देवराज इन्द्र अपना दैवी स्वराज्य हार गये थे तब उन्होंने इन्द्राणी से राखी बँधवाई थी जिससे उनका खोया हुआ स्वराज्य पुन: प्राप्त हो गया

था। रक्षा बन्धन को पुण्य प्रदायक पर्व भी कहा जाता है। यह त्योहार श्रावण मास में मनाते हैं और सत्संग आदि भी खूब करते हैं। यह सब बातें इस सत्यता की द्योतक हैं कि रक्षा बन्धन एक धार्मिक उत्सव है जिसका सम्बन्ध जीवन में श्रेष्ठता एवं निर्विकारिता से है। इसीलिए इसको 'विष तोड़क पर्व' भी कहा जाता है।

रक्षा बन्धन का आध्यात्मिक रहस्य

अब इस प्रश्न पर विचार करेंगे कि इस पर्व का वास्तविक महत्त्व क्या है? यह तो सर्वमान्य है कि केवल सर्व समर्थ परमात्मा ही सर्व मनुष्य-आत्माओं की हर प्रकार से रक्षा करने वाला है। परमात्मा को ही संकट-मोचन, दु:ख-भंजन, खिवैया आदि नामों से याद किया जाता है। मनुष्य परमात्मा से ही प्राणदान तथा तन-मन-धन की रक्षा का वरदान माँगते हैं। सृष्टि चक्र में, कलियुग के अन्त में एक ऐसा समय भी आता है जब कि समूचे मानव समाज का नैतिक एवं चारित्रिक पतन हो जाता है। माँ-बहनों की लाज ख़तरे में पड़ जाती है तो ऐसे अति धर्मग्लानि के समय ही परमपिता परमात्मा, नई पावन दैवी सृष्टि की पुनर्स्थापना का कार्य प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कराते हैं। कहावत भी प्रसिद्ध है कि ब्राह्मण, ब्रह्मा जी के मुख से उत्पन्न हुए थे। इसका आध्यात्मिक रहस्य यह है कि ज्ञान सागर परमात्मा ने ब्रह्मा के मुख से ज्ञान सुना कर जिन मनुष्यात्माओं को पतित से पावन बनाया वही सच्चे ब्रह्मा-मुखवंशावली ब्राह्मण अथवा ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ कहलाए। तब इन ब्रह्मा-वत्सों (ब्राह्मणों, मुख्यत: आध्यात्मिक बहनों) ने सभी पुरुषों को पवित्रता की राखी बाँधकर कुदृष्टि से अपनी रक्षा करने के लिए सर्व रक्षक परमपिता परमात्मा के संरक्षण में रहने की प्रतिज्ञा करवाई थी। रक्षाबन्धन इसी महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त का स्मरण दिवस है। इसी की याद में हर वर्ष ब्राह्मणों द्वारा अथवा बहनों द्वारा भाइयों को राखी बाँधकर तिलक लगाने की रस्म मनाई जाती है। तिलक आत्म-स्मृति का द्योतक है जिसमें स्थित रहने से मनुष्य काम विकार रूपी महाशत्रु पर विजय प्राप्त कर सकता है।

***

सच्चाई का पथ

मानवता का पथ अपनाएँ,
आओ हम नव फूल खिलाएँ।
धर्म, सत्य की बात करें बस,
सच्चाई को अब अपनाएँ।
इंसानों जैसी करनी हो,
प्यार-मोहब्बत के गुण गाएँ।
पैसा, शोहरत और नाम-यश,
व्यर्थ है सब कुछ, हम बच जाएँ।
सच्चे गुरु से प्रीत लगा कर,
निज जीवन को सफल बनाएँ।
पाप, झूठ और स्वार्थ-कपट से,
मुँह मोड़ें, दूर हट जाएँ।
परमपिता है संग हमारे,
इसी सत्य से मन महकाएँ।
ख़ुद की ख़ातिर तो सभी जी रहे,
हम औरों पर ध्यान लगाएँ।
जीवन-सुमन खिलेगा तब ही,
जब अंतर में त्याग बसाएँ।

–प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे, मंडला

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं विश्व में एक राज्य

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

विश्व में एकता हो तो उससे अनेकानेक लाभ होते हैं, इस सत्य को सब जानते और मानते हैं परन्तु एकता कैसे हो, इस विषय में अनेकानेक मतें हैं। पहले लोग समुद्र मार्ग से विदेश जाते थे, उस समय जहाज़ों को लूटने के लिए समुद्री डकैत होते थे। कई देश अपने देश में दूसरे देशों का माल आने नहीं देते थे या आने में अनेक समस्यायें खड़ी करते थे। आयात शुल्क इतना लगाते थे कि दूसरे देश का माल उस देश में आना कठिन होता था। एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए वीज़ा आदि की अनेकानेक समस्यायें खड़ी करते थे जिनकी लिस्ट निकालें तो 108 की लिस्ट बन जायेगी।

ऐसी समस्याओं का समाधान निकालने के लिए अनेक देशों ने मिलकर लीग ऑफ नेशन्स की जिनेवा में स्थापना की परन्तु वह लीग इन समस्यायों का समाधान करने में असफल रही। उसके बाद अमेरिका में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई और साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय कानूनी कारोबार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की रचना की गई। स्वास्थ्य के क्षेत्र में विश्व स्वास्थ्य संस्थान की स्थापना की गई। इन संस्थाओं ने वैश्विक स्तर पर कार्य करने का पुरुषार्थ किया। जैसे विश्व स्वास्थ्य संस्थान ने निश्चित किया कि विश्व के सर्व मनुष्यों को सन् 2000 तक सर्वांगीण स्वास्थ्य प्राप्त हो या संयुक्त राष्ट्र संघ ने निश्चित किया कि हम सब मिलकर एक सुन्दर, सुखमय विश्व बनायेंगे। ऐसे ही व्यापार के क्षेत्र में एकता हो, उसके लिए विश्व व्यापार संगठन बनाया गया है।

जैसे रशिया में साम्यवादी विचारधारा वाले राज्यों ने संगठित होकर सोवियत यूनियन की स्थापना की थी वैसे ही वर्तमान समय यूरोप के कई देशों ने मिलकर एक संगठन बनाया, जिसके द्वारा आपसी एकता लाने का पुरुषार्थ आरम्भ किया है। आरम्भ में इस संगठन के 9 देश ही सदस्य थे और इंग्लैण्ड ने इसकी आंशिक सदस्यता ग्रहण की थी परन्तु इस संगठन की सफलता को देखकर यूरोप के 25 देश सदस्य बन गये हैं। इस संगठन द्वारा समस्त यूरोप में एक राज्य निर्माण करने का पुरुषार्थ किया जा रहा है। स्ट्रेसबर्ग, जो जर्मनी और फ्रांस की सीमा पर स्थित है, को इसका मुख्यालय बनाया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने जैसे गैर-सरकारी संस्थाओं को अपने पास रजिस्टर्ड करने का कारोबार आरम्भ किया, ऐसे ही इस यूरोपियन यूनियन ने भी गैर-सरकारी संस्थाओं को अपने पास रजिस्टर्ड करने का प्रावधान रखा है।

इसके 25 सदस्य देशों को एक से दूसरे देश में आने-जाने की स्वतंत्रता दी गई है। कई देशों में तो सदा के लिए रहने की और व्यवसाय आदि करने की भी छूट दी गई है। यूरोप से अतिरिक्त देशों के निवासियों को भी इनमें से एक देश का वीज़ा मिलने पर यूनियन के सभी देशों की यात्रा करने की छूट दी गई है। इन सदस्य देशों में जो आर्थिक दृष्टि से गरीब हैं, उनकी गरीबी मिटाने के लिए सम्पन्न देशों द्वारा सहायता दी जाती है। व्यापार में अवरोध उत्पन्न करने वाला आयात शुल्क भी कई देशों ने खत्म कर दिया है।

इस यूनियन ने सबसे बड़ा प्रयोग तो यह किया है कि सभी सदस्य देशों की राष्ट्रीय मुद्रा को खत्म करके एक सर्व मान्य मुद्रा निर्मित की गई है जिसका नाम रखा गया है – यूरो डालर। आर्थिक रूप से इसकी सफलता इतनी अच्छी हुई कि आरम्भ में एक यूरो डॉलर का मूल्य भारत का 32 रुपया था परन्तु अभी बढ़कर 53 रुपया हो गया है। जबकि एक अमेरिकन डॉलर की कीमत वर्तमान समय 43.50 रुपया हो गया है। यूरो डॉलर की कीमत बढ़ने से सदस्य देशों

की आर्थिक स्थिरता और उन्नति करीब 30 प्रतिशत बढ़ गई है। यूनियन के सदस्य देशों में एक इंग्लैण्ड ने अपनी मुद्रा बदली नहीं है, बाकी सभी देशों ने यूरो डॉलर की पद्धति को अपने यहाँ कार्यान्वित किया है।

कुछ मास पहले इस यूनियन के सभी सदस्य देशों ने मिलकर अपना एक संविधान भी बनाना चाहा कि जिससे सभी सदस्य देश एक देश के समान बन जायें और संगठन अधिक मज़बूत बन जाये। परन्तु फ्रांस और हालैण्ड की जनता ने इस संविधान का विरोध किया। उस विरोध की भी एक गज़ब की कहानी है। तुर्किस्तान के पानी के पाइप फिटिंग वाले, फ्रांस में स्थाई होने के लिए गये और उन्होंने कम दर वहाँ पाइप फिटिंग का काम किया जिससे फ्रांस वालों को लगा कि अगर हम इस संविधान को स्वीकार करते हैं तो गरीब देशों के लोग हमारे देश में आकर कम दर पर सेवायें करेंगे और पुराने लोगों के लिए रोज़ी-रोटी की समस्या खड़ी कर देंगे। ऐसे ही इटली की राष्ट्रीय मुद्रा लीरा कमज़ोर है अर्थात् उसका मूल्य कम है। उसे मदद करने के लिए अन्य सम्पन्न सदस्य राष्ट्रों को आर्थिक सहायता करनी होगी। इंग्लैण्ड ने इस संविधान पर हस्ताक्षर करने से पहले अनेक प्रकार की शर्तें रखी हैं। इस प्रकार देशों की एकता के कार्य में कुछ बिलम्ब हो रहा है। एकता को सिद्ध करने के लिए सभी सदस्य देशों का एक ही राष्ट्रीय ध्वज बनाने का प्रावधान रखा गया है जिसकी सफलता तो आगे प्रत्यक्ष होगी।

अभी-अभी मैंने यूरोप के कई देशों की यात्रा की और कइयों ने मुझे इस यूरोपियन संगठन की सफलता के विषय में बताया और कइयों ने प्रश्न भी पूछे कि हमारे इस संगठन को जितनी सफलता मिलनी चाहिए, उतनी सफलता क्यों नहीं मिल रही है और हमको इसकी सफलता के लिए और क्या प्रयत्न करना चाहिए, इसकी सफलता के बीच अनेक प्रकार के अवरोध और विरोध क्यों आ रहे हैं, जिससे कि हमारी एकता दृढ़ नहीं हो पा रही है।

विश्व में इस प्रकार से एकता लाना बहुत कठिन बात है, इस सत्य को सब जानते और मानते हैं। सभी इस बात को भी जानते और मानते हैं कि यदि विश्व में एकता हो जाये तो आज जो हर देश को युद्ध और युद्ध की साधन-सामग्री निर्मित करने के लिए खर्च करना पड़ता है, वह बंद हो जाये। वही खर्च जनता के उत्कर्ष के लिए करें तो हर देश की बहुत उन्नति हो सकती है, हर देश में समृद्धि आ सकती है।

वर्तमान विश्व में देहाभिमान के आधार पर धर्म भेद, भाषा भेद, रंग भेद आदि के संस्कारों के कारण परस्पर राग-द्वेष बढ़ता जा रहा है। परमात्मा पिता ने आकर आत्मा का यथार्थ ज्ञान देकर आत्मा के शान्ति, अहिंसा स्वधर्म में स्थित होने की विधि बताई है, जिससे सबके मन से भेदभाव के संस्कार खत्म हो जाते हैं। शान्ति और अहिंसा सबको प्रिय हैं। माउण्ट आबू में अब तक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सम्मेलन और कार्यक्रम हुए हैं, जिसको संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी स्वीकार करके परमात्मा के शान्ति स्वधर्म की स्थापना के इस कार्य को शान्तिदूत के अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया है और विश्व के 6 अन्य देशों ने भी पुरस्कार दिये हैं। इस प्रकार दैहिक धर्म के आधार पर विश्व में एकता लाने के लिए जो मुख्य अवरोध था वह समाप्त किया।

परमात्मा ने कल्प-वृक्ष का ज्ञान देकर एक वैश्विक धर्म की पुनर्स्थापना का मार्ग प्रशस्त करते हुए बताया है कि आप आत्मायें सृष्टि के आदि में श्रेष्ठ धारणाओं वाले देवी-देवता थे, अभी फिर से उन्हीं धारणाओं को धारण कर देवी-देवता बनना है। **आज के विश्व में किसी भी धर्म के अनुयायी में अपने धर्म के अनुसार धारणायें नहीं हैं परन्तु शिव परमात्मा ने सभी ब्रह्मा-वत्सों के जीवन-व्यवहार में पवित्रता, ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा से दैवी गुणों की धारणा को दृढ़ बना दिया है।**

आज के विश्व में विज्ञान का बल है परन्तु पवित्रता का बल न होने के कारण भोग वृत्ति, खाओ-पीयो और मौज करो की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। ईश्वरीय ज्ञान, राजयोग और पवित्रता के बल से वह प्रवृत्ति खत्म होकर ''सादा जीवन उच्च विचार'' की प्रवृत्ति जाग्रत कर समाज में एकता लाने का दिव्य प्रयोग परमात्मा करा रहे हैं। सभी धर्मों को एक ही कल्प-वृक्ष में तना, डाल-डालियों के रूप में दिखा कर यह सिद्ध कर दिया कि सभी धर्म एक ही बीज से उत्पन्न हुए हैं। कल्प-वृक्ष जैसा एकता लाने वाला श्रेष्ठ चित्र और सिद्धांत अब तक विश्व में किसी ने नहीं बनाया है, बना भी कैसे सकते हैं क्योंकि यह कार्य एक परमात्मा का ही है, उनको ही करना है।

गीता में भी सृष्टि की तुलना एक उल्टे वृक्ष से की गई है। गीता में यह बात 15वें अध्याय में लिखी है परन्तु उस उल्टे वृक्ष के साथ सभी धर्मों का आपस में क्या सम्बन्ध है, इसके विषय में कुछ भी नहीं लिखा है और न ही गीता के अनेकानेक टीकाकारों का ध्यान इस ओर गया है। कल्प-वृक्ष का यह गुह्य रहस्य तो सर्व धर्मों के बीज रूप परमपिता परमात्मा ने ही बताया है, जिसके आधार पर हम आत्माओं में सर्व धर्मों की आत्माओं के प्रति सद्भाव और सर्व के कल्याण की भावना जाग्रत हुई और विश्व एकता का दिव्य पुरुषार्थ चल रहा है।

विश्व के विभिन्न देशों में विभिन्न वर्ग, आयु, भाषा के मनुष्य, सब भेद मिटा कर प्रतिदिन शिव पिता की श्रीमत, जो मुरली (ईश्वरीय महावाक्यों) द्वारा मिलती है उसे ग्रहण करते हैं, यह भी ईश्वरीय कार्य की एक महान उपलब्धि है। परमात्मा इस प्रकार मुरली के द्वारा जो सर्व आत्माओं में एकता लाने का प्रयत्न कर और करा रहे हैं, उसकी गहराई में जाकर विचार करेंगे तब ही विश्व एकता में मुरली की दिव्यता, उपयोगिता और उसके महत्त्व को समझ सकेंगे। मुरली के द्वारा हम सब में जो एक समान संस्कार और व्यवहार गुप्त रूप में प्रस्थापित हो रहा है, उसकी महिमा करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। इतना क्रान्तिकारी कार्य परमात्मा मुरली के द्वारा करा रहे हैं। जहाँ तक मुझे ज्ञान है, दुनिया में ऐसी कोई भी संस्था नहीं है, जहाँ इतने बड़े स्तर पर एक ही समान विचारधारा बनाने का और संस्कार परिवर्तन का पुरुषार्थ हो रहा हो।

★★★

सिवनी (म.प्र.)- बार एसोसियेशन में वकीलों के समक्ष दिव्य उद्बोधन देती हुईं ब्र.कु. उर्मिला बहन।

'पत्र' सम्पादक के नाम

प्रश्न - क्या पेड़-पौधों में आत्मा होती है, क्या उन्हें भी पीड़ा होती है?

उत्तर - कुछ लोग यह तर्क करते हुए सुने जाते हैं कि जान तो पेड़-पौधों में भी होती है। अत: जब हम फल खाते हैं तो अपनी उदर-पूर्ति के लिए दु:ख तो हम उनको भी देते ही हैं। वास्तव में यह तर्क भ्रान्तियों पर आधारित है क्योंकि एक तो पेड़-पौधों में वैसा स्नायुतंत्र (Nervous system) और मस्तिष्क (Brain) नहीं होता जैसा कि पशु-पक्षियों में होता है। इसके अतिरिक्त फल, अनाज, सब्जियाँ इत्यादि जो हम लेते हैं, वे अपनी पूर्ण आयु को प्राप्त हो चुके होते हैं और यदि उस अवस्था में उन्हें न लिया जाए तो उसके बाद गलने, सड़ने और नष्ट होने की स्थिति उनकी वैसे भी आ जाती है। फिर विशेष बात यह है कि पेड़-पौधों में भी प्रोटोप्लाज्म (Protoplasm) तथा अन्य वे रासायनिक तत्व (Chemical Ingredients) तो होते हैं जो कि पशुओं में होते हैं परन्तु पेड़-पौधों में आत्मा का वास नहीं होता जैसे कि पशुओं और जीव-जन्तुओं में होता है। अत: पेड़-पौधे पशुओं की तरह बढ़ते तो हैं परन्तु उनको भय, दु:ख, अशान्ति नहीं होती क्योंकि न उनमें मस्तिष्क है, न बुद्धि, न मन, न आत्मा। अत: उन्हें भोजन के रूप में लेने से दु:ख पहुँचाने की बात ही नहीं उठती क्योंकि दु:ख-सुख की अनुभूति का प्रश्न आत्मा अथवा मन और बुद्धि से जुटा हुआ है।

प्रश्न उठाया जा सकता है कि वनस्पति क्षेत्र में वैज्ञानिकों द्वारा किए गए तजुर्बों के आधार पर यह सर्व ज्ञात है कि मनुष्य के अच्छे या बुरे चिन्तन का प्रभाव पेड़-पौधों पर भी पड़ता है; तब यह कैसे न माना जाये कि उनमें भी आत्मा है और वे अनुभवशील हैं? इस विषय में निवेदन यह है कि मनुष्य के विचारों के प्रकम्पनों का प्रभाव तो पेड़-पौधों पर पड़ता है जैसे कि शरीर पर, लेकिन उसका यह अर्थ नहीं है कि पेड़-पौधों में भी चेतनता है अथवा उनमें चेतन आत्मा का निवास है बल्कि इसकी सही व्याख्या तो दूसरी ही है। इसको हम एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं – जैसे विद्युत के प्रकम्पन तांबे, टंग्स्टन अथवा सोने को प्रभावित कर सकते हैं, वैसे वे लकड़ी, रब्बर या प्लास्टिक को नहीं कर सकते क्योंकि प्रथमोक्त धातुएँ तो बिजली के लिए योग्य माध्यम (Good Conductors of electricity) हैं जबकि लकड़ी, प्लास्टिक आदि बिजली के लिए अनुकूल माध्यम (Conductors) नहीं हैं। उसी प्रकार, पेड़-पौधों का प्रोटोप्लाज्म मनुष्य के विचारों के प्रकम्पनों से प्रभावित होने वाला माध्यम है। उन प्रभावों को देख कर उनमें आत्मा मानना भूल है। पुनश्च, पेड़-पौधों में जीव-जन्तुओं का वास तो हो सकता है और होता है जैसे कि मानव शरीर में भी असंख्य जीवाणुओं का वास होता है, परन्तु हर पौधे और हर पेड़ में किसी स्वामिनी आत्मा का वास नहीं होता जैसे कि किसी शरीर में, शरीर के भोक्ता – किसी आत्मा का वास होता है। अत: पेड़-पौधों से फल अथवा उन द्वारा होने वाली उपज के द्वारा मनुष्य अपने भोजन की सामग्री जुटा कर उनके दु:ख का निमित्त कारण नहीं बनता। ★★

ईश्वरीय वरदान ने बनाया निर्भय

– ब्रह्माकुमारी हेमलता, ट्रिनिडाड

सन् 1968 में ब्रह्माकुमार महेन्द्र सिंह भाई जी (ब्रह्माकुमारी कुलदीप बहन के लौकिक पिताजी) हैदराबाद आये। प्यारे बाबा ने उन्हें ब्रह्माकुमारी आश्रम खोलने के लिए भेजा था। उन्होंने मंदिरों में ईश्वरीय ज्ञान के प्रवचन करने प्रारंभ किए। बहुत-सी मातायें इन प्रवचनों को सुनने जाने लगीं और उनके जीवन में बहुत श्रेष्ठ परिवर्तन आने लगा। मेरी लौकिक बड़ी विवाहित बहन भी प्रवचन सुनने गई और उनका साक्षात्कार का पार्ट शुरू हो गया। उनको साक्षात्कार के माध्यम से ही ज्ञान की गहराई स्पष्ट होने लगी। हम परिवार के सदस्य इस बात को समझ नहीं पाये इसलिये पूछताछ करने के लिये मैं आश्रम पर गई। वहाँ पर मुझे भाई जी मिले और उन्होंने मुझे आत्मा का ज्ञान दिया जिसे सुनकर बहुत शांति मिली, ज्ञान भी बहुत अच्छा लगा। उन्होंने मुझे सात दिन का कोर्स करने का निमंत्रण दिया। मैंने कहा - ''मैं बहुत व्यस्त रहती हूँ।'' उन्होंने कहा कि दिन के 24 घंटों में से 23 घंटे भले ही अपने को व्यस्त रखो पर कम से कम एक घंटा तो भगवान के लिये अवश्य ही निकालो। मैं घर आ गई और जब रात को सोने लगी तो मेरे मन में आश्रम पर सुनी हुई यह बात बार-बार घूमने लगी कि ''एक घंटा तो भगवान के लिये अवश्य ही निकालो, एक घंटा अवश्य...।'' इसी चिंतन में मैं अगले दिन पुन: आश्रम पर पहुँच गई। छोटा-सा कमरा था, बारदाना बिछा हुआ था। भाई जी के द्वारा मेरा सात दिन का कोर्स प्रारंभ हो गया। कोर्स करते-करते मुझे ऐसा लगा कि मेरे मन के अंदर गुप्त कोई कैसेट या फाइल खुल गई है। मुझे लगने लगा कि यह सारा ज्ञान मेरे अंदर भी था लेकिन अभी तक गुप्त था। कोर्स करने के तुरंत बाद मैं दूसरों को कोर्स कराने लगी।

एकाग्रता और मनोबल बढ़ा – जब मैंने प्यारे ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी सुनी तो मेरा मन आश्चर्य-मिश्रित आनन्द से भर गया कि देखो, भगवान ने धरती पर आने की कितनी सुंदर युक्ति रची है। ब्रह्मा के तन में उनका आगमन कितना गुप्त और कितना कल्याणकारी है। मैंने मन में ठान लिया कि मैं अपने परिवार और जान-पहचान के लोगों को ईश्वरीय ज्ञान का परिचय ज़रूर दूँगी। उन दिनों मैं एम.बी.बी.एस. द्वितीय वर्ष की छात्रा थी। मैंने लौकिक पढ़ाई जारी रखी और ईश्वरीय कार्य में मदद भी करती रही। ईश्वरीय ज्ञान के अभ्यास से लौकिक पढ़ाई में मुझे बहुत सफलता मिली। मैंने अपने बाल्यकाल से ही चरित्र को ऊँचा बनाने की तरफ विशेष ध्यान दिया था। सह-शिक्षा लेते हुये भी मैंने अपने जीवन को पूरी तरह मर्यादित और स्वच्छ रखा था। मैं चाहती थी कि मेरा मनोबल और एकाग्रता और अधिक बढ़ें ताकि मैं कम समय में ज्यादा काम कर सकूँ। राजयोग के अभ्यास से मेरी ये दोनों इच्छायें पूर्ण हुईं। पहले मैं रात को दो बजे तक पढ़ती थी और सुबह देर से उठती थी पर राजयोगी बनने के बाद मैंने रात को दस बजे सोना और सुबह दो बजे उठना शुरू किया। ईश्वरीय महावाक्य भी नियमित सुनने लगी जिससे मेरा मनोबल और एकाग्रता बहुत बढ़ गये।

परीक्षा का भय मिटा – पहले मुझे परीक्षा से बहुत भय लगता था। मेरे मन में भ्रांति थी कि परीक्षक हमें सफल नहीं बल्कि असफल करना चाहते हैं। परंतु ज्ञान में आने से मेरी यह भ्रांति दूर हो गई। मुझे महसूस हुआ कि हर परीक्षक की इच्छा होती है

कि हर बच्चा सफल हो। मेरी आत्मिक दृष्टि बन जाने से मुझे परीक्षक भी भाई नज़र आने लगा। उसके प्रति मन में जो भय था वो निकल गया। साक्षात्कार के समय भी उत्तर देने में आत्मविश्वास आ गया। कभी जब उत्तर नहीं दे पाती थी तो लगता था कि परीक्षक भी मुझे मदद कर रहे हैं। कई बार परीक्षा के समय वे बातें, जो किताब में नहीं पढ़ीं होतीं थीं पर कक्षा में लेक्चर में सुनी होती थी, दिमाग की स्क्रीन पर उभर आती थीं और मैं उन्हें उत्तर के रूप में लिख लेती थीं। किताब से मिलान करने पर वे बिल्कुल ठीक निकलती थीं। यह सब राजयोग के अभ्यास का कमाल था। मुझे ऐसे लगता है कि एम0बी0बी0एस0 की पढ़ाई मुझे सौगात के रूप में मिली। मैंने उसमें कोई विशेष मेहनत नहीं की।

सन् 1973 में मेरी पढ़ाई पूरी हो गई। मैंने एक वर्ष तक डॉक्टर के रूप में सेवायें दीं। मेरा उद्‌देश्य सेवा करना था। जब मैं रोगियों को देखती थी तो लगता था कि इनका मन बहुत-बहुत बीमार है। अत: केवल शरीर की जाँच करने से काम पूरा नहीं होगा। मेडिकल ज्ञान के साथ आध्यात्मिकता को मिलाकर जब मैंने रोगियों के मन को समझना और उसे निश्चिंत बनाकर तन को ठीक करना शुरू किया तो मुझे बहुत सफलता मिली। आध्यात्मिक मूल्यों को साथ लेकर चलने के कारण मुझे हर व्यक्ति से बहुत स्नेह और सहयोग मिला। मेरा व्यवहार भी सबके प्रति बहुत स्नेहपूर्ण रहा। फिर एक दिन मैंने सोचा कि यदि सर्व बीमारियों का मूल कारण मन ही है तो क्यों ना मन को स्वस्थ और शक्तिशाली बनाने के लिए ही जीवन को समर्पित कर दिया जाये। इस उद्‌देश्य से मैंने आध्यात्मिक सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। मेरे लौकिक भाइयों को मेरा संस्था में समर्पित होना अजीब-सा लगा। वे कहते थे कि आश्रम पर रहेगी तो लोगों का दान दिया हुआ खाएगी। वे कहते थे कि कमाकर खाओ और कमाई में से कुछ हिस्सा आश्रम पर भी दो। परंतु आश्रम पर रहना भी अपने आप में एक कमाई है। हम हज़ारों आत्माओं की सेवा करके पुण्य, दुआयें और श्रेष्ठ कर्म कमाते हैं। अत: आश्रम पर रहकर हम दान का नहीं खाते लेकिन परमपिता परमात्मा शिव का दिया हुआ भोजन अनासक्त भाव से स्वीकार करते हैं और सेवा के द्वारा पुण्य का खाता अर्जित करते हैं।

विदेश सेवा पर जाना हुआ – मुझे पहले-पहले ग्याना देश में जाकर ईश्वरीय सेवा करने का सौभाग्य मिला। मैंने देखा कि वहाँ 50 प्रतिशत भारत के ही लोग हैं। उन सबकी हमारे प्रति बहुत अच्छी भावनाएं भी देखीं। वे समझते थे कि भारत से ज्ञान-गंगाएँ आई हैं और भावनापूर्वक ज्ञान सुनते थे। मैंने देखा कि भौतिक पदार्थों की अधिकता होते हुए भी उनके जीवन में शांति नहीं है, जीवन निरंकुश है। खान-पान तामसिक है। पारिवारिक एकता नहीं है। शराब और कबाब के कारण जीवन में स्थिरता नहीं है। ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा हमने उनको इन समस्याओं से मुक्त करने का लक्ष्य लिया और सफलता मिली। हमारे पास एक भाई आता था, बहुत शराब पीता था। उसकी नौकरी भी इस कारण खतरे में थी। उसके अधिकारी उसे नौकरी से निकाल देने की कई बार चेतावनी भी दे चुके थे। साल में दो बार वह कार दुर्घटना कर ही लेता था। उसके बच्चों के पास पढ़ने के लिए फीस का पैसा भी नहीं होता था। लेकिन ईश्वरीय ज्ञान में आते ही उसका विवेक जाग गया। उसने अपने दुष्कर्मों को पहचाना और उसका सारा जीवन

बदल गया। सारा परिवार सुखी हो गया। जब मैं विदेश गई थी तो शुरू-शुरू में मुझे लगा कि मैं कहाँ आ गई हूँ पर धीरे-धीरे मैंने समझा कि यहाँ के सभी लोग भी परमपिता परमात्मा शिव की संतान हैं। आत्मा रूप में मेरे भाई हैं। उनके प्रति दया और प्रेम की भावना उत्पन्न हुई और ज्ञान लेने के बाद जब उनके जीवन में खुशी आई और भगवान पर उनका पूरा निश्चय बैठा तो हमारी भी खुशी और निश्चय बढ़ गए। हमें उन पर गर्व हुआ कि भारत से इतना दूर होते हुये भी, भिन्न संस्कृति होते हुए भी, धरती पर आये हुये भगवान को इन्होंने पहचान लिया है। जब मैं विदेश गई तो प्यारे बाबा ने वरदान दिया कि आपको साहस रखना है। इस वरदान से मैं निर्भय हो गई। किसी भी परिस्थिति में भय नहीं लगता है। हर आत्मा के प्रति अपनापन महसूस होता है। आजकल मेरा विशेष पुरुषार्थ यही है कि किसी भी स्थान के प्रति लगाव और मेरा-पन ना हो। जहाँ भी अवसर मिले वहीं पर ईश्वरीय सेवा करूँ। पिछले लगभग तीस वर्षों से मैं ट्रिनिडाड में रह रही हूँ। सूरीनाम, जमैका, ग्रेनेडा, बारबडोस आदि देशों में बार-बार सेवा करने का अवसर मिलता है। ❑

मूल्यनिष्ठ रक्षा बंधन

ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

थोड़ी-सी दिव्यता ले, निर्मल मनस हस्तों से,
पवित्रता की डोरी में,
परमात्म याद से पिरोया जो मन-आनन्द,
बना वो ही मेरा रक्षा-कँगन।

जीवन मूल्य बढ़ाना है तो करें आओ ऐसा रूहे अनुबन्ध,
आप भी मना लो इतना प्यारा, इतना न्यारा रक्षा बंधन।

धीरज से, संयम से, करके भीतर में संकल्पों का नियंत्रण,
थोड़ा-सा हो के विश्व कल्याणी
किया जो विचार सागर मंथन,
संजोया जो अनमोल रस औ पाया स्व प्रबन्धन,
और सुखद, निर्भय, निर्विकार पाया संरक्षण।
आओ आप भी बंधवा लो ऐसा नवीन रक्षा बंधन।।

थोड़ी-सी सहनशीलता ले, सद्भावना की झोली में,
झुलाया जो शुद्ध, शुभ निस्वार्थ स्नेह स्पन्दन;
कहा सत्यता को सभ्यता से वो ही बना मेरा संरक्षण,
जीवन में सुसम्बन्ध बनाना है
आप भी करो यह कवच धारण;
तभी कहेंगे मनाया हमने सच्चा रक्षा बंधन!
तोड़ें बेड़ियाँ लोहे की, करें स्वतंत्र बाँध के,
मिटा के मन क्रन्दन बनाएँ जीवन कानन नन्दन,
बनाना है इस जीवन को सफल-सुगन्ध;
तो आओ लेवें संकल्प मूल्य-निष्ठता का,
नैतिकता का, एकता का, सहृदयता का, मर्यादा का,
भ्रातृत्व का, विचरे हर कोई मनभावन
तो आओ बंध जाओ जीवन बनेगा चन्दन।
देता यही संदेश मूल्यनिष्ठ रक्षा बंधन।।

▲▲

हृदय रोग – एक सफल रूहानी शोध

– हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता, ग्लोबल हॉस्पिटल, शान्तिवन

(पिछले लेख में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता द्वारा वर्तमान समय विश्व में हृदय रोगियों की बढ़ती संख्या, विज्ञान के साधनों द्वारा इसके मूल कारणों का उन्मूलन न हो पाने की स्थिति, गलत खान-पान तथा नकारात्मक सोच का हृदय धमनियों पर बुरा असर, हृदय रोग के चिन्ह, एन्जियो प्लास्टी, बाई पास सर्जरी आदि बातों पर प्रकाश डाला गया। हृदय रोग उन्मूलन के क्षेत्र में उनको निमित्त बनाकर जो रूहानी शोध कार्य प्रारम्भ हुआ उसके सफल परिणामों का विवरण आगे पढ़िए–सम्पादक)

कार्यक्रम की रूपरेखा

हृदय रोग उन्मूलन के सम्बन्ध में आध्यात्मिक अर्थात् रूहानी शोध का कार्य प्रारम्भ हुआ ग्लोबल हॉस्पिटल तथा Defence Institute of Physiology and Life Sciences के आपसी सहयोग से। दूसरे अस्पतालों से रोगी उन्होंने हमारे पास भेजे। स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार, राजयोग शिक्षा तथा अनुसन्धान संस्थान और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने इसे स्पॉन्सर किया। इसका टॉपिक रखा **'तनाव की समाप्ति तथा भोजन और व्यायाम के द्वारा हृदय रोग की** समाप्ति।' पिछले सात साल से चल रहे इस शोध कार्य के दौरान जो परिणाम सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं – मानव जब चिन्ता, जल्दी, क्रोध, उदासी, अकेलेपन का अनुभव करता है तो उसे गलत खान-पान की आदत पड़ जाती है। जब उसका मन कड़वाहट महसूस करता है तो वह मीठी वस्तु खाना चाहता है। मन में जब खालीपन का अहसास पैदा होता है तो वह तली हुई चीजें खाना चाहता है। पकोड़े, समोसे खाना माना अपने हृदय को सीधा अवरुद्ध करना। अन्धेरे में चलना भी हृदय की बीमारी का मुख्य कारण है। देर से सोना तथा अनिद्रा भी इस बीमारी का बड़ा कारण है।

इस शोध में मनोवैज्ञानिक, दिमाग के डॉक्टर, शरीर विज्ञानी, हारमोन्स के डॉक्टर, व्यायाम कराने वाले, हृदय के डॉक्टर तथा आध्यात्मिक जन आदि सभी का सहयोग रहा। विज्ञान कहता है कि अवरोध नहीं खुल सकते पर साइलेन्स ने खोलकर दिखाए। मैं अन्दर-ही-अन्दर खुशी की बयार में बह रहा था, यह सारा-का-सारा टीम वर्क है। भगवान का नाम दिलाराम है, यह स्मृति मुझे बहुत बल देती है। कई बार लोग कहते थे कि आप इतने गम्भीर हालत के रोगियों को बुलाते हैं यहाँ शिविर में, इनको कुछ हो गया

तो ? मैं कहता था - ''नहीं, बाबा का नाम दिलाराम है, मेरे पास थोड़े ही आते हैं, बाबा के पास आते हैं। मेरा नाम थोड़े लगेगा। नाम तो उसका होगा। अच्छा होगा तो उसका, बुरा होगा तो उसका।'' मुझे कभी डर नहीं लगता था। कई बार ऐसा भी हुआ कि कोई एकदम बेहोश जैसे भी हो गए परन्तु अगले क्षण ठीक भी हो जाते थे। मैं तो कहता हूँ कि यह बाबा की जादूगरी थी। सात साल हम सभी ने मिल कर इस पर कार्य किया है। तब हमें मालूम पड़ा है कि हृदय की बीमारी के सही कारण और निवारण क्या हैं। हमने दो प्रकार से अध्ययन किया था। एक तो था कि क्या राजयोग से हृदय के अवरोध खुल सकते हैं, क्या इससे हृदयाघात की संख्या कम हो सकती है, क्या इससे बाई पास सर्जरी और एन्जियोप्लास्टी
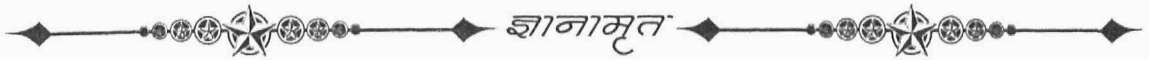
न करानी पड़े ऐसा हो सकता है। इसके अध्ययन के लिए हमने एक Healthy Life Style Group (स्वस्थ जीवन पद्धति) बनाया और दूसरा Control Group बनाया। हमने उनकी अनुमति ली कि आप इसमें भाग लेना चाहते हो या नहीं। उनकी अनुमति मिलने पर पूरे रिकॉर्ड बनाए गए। हमने दोनों समूहों को समान दवाई और भोजन और व्यायाम कराया। स्वस्थ जीवन पद्धति वालों को राजयोग से चिन्ताओं को मिटाना सिखाया और दूसरे समूह को बताया कि चिन्ता नियन्त्रित करने के लिए आप जो भी करते हैं जैसे कि प्रार्थना आदि वो करिए। गुस्सा, चिन्ता मत करिए। बाकि सब समान रखा गया। पहले समूह को बताया गया कि आत्मिक स्थिति में रह कर दवाई खाइये। दूसरे को बताया गया कि अपने तरीके से चलिए।

पहले ग्रुप में 80% रोगी तीसरी श्रेणी के थे अर्थात् जिनको 50 मीटर चलना भी मुश्किल था परन्तु इनको 7वें दिन ही काफी फायदा हो गया था। वे सातवें दिन 3 कि.मी. चल पाते थे। दूसरे ग्रुप में थोड़ा सुधार हुआ। कार्यक्रम में ऐसे रोगी भी आए जो एक मास में 7 हजार की इवाइयाँ भी खाते थे परन्तु अब केवल 6 रुपये की इवाई खाते हैं। जो लोग राजयोग का अभ्यास करते थे वे भोजन या व्यायाम के नियमों को सही निभा सके परन्तु दूसरे समूह वाले कभी कर पाते थे और कभी नहीं। पहले समूह में जिनका कोलेस्ट्रोल 200 से अधिक था उनका 24% कम हुआ और दूसरे ग्रुप में केवल 2% कम हुआ। पहले समूह में चिन्ता 24% कम, दूसरे में 12% कम हुई। पहले समूह में उदासी 40% कम, दूसरे में 20% बढ़ गई। पहले समूह में गुस्सा 44% कम, दूसरे में 20% बढ़ गया। पहले समूह में 94% की ब्लॉकेज खुली, दूसरे में 81% की ब्लॉकेज बढ़ गई। जिन्होंने राजयोग का अभ्यास, हर घण्टा आत्म निरीक्षण आदि नियमों को रुचिपूर्वक, गम्भीरता से अपनाया उनकी आर्टरी ज़्यादा खुली। **हृदय का सम्बन्ध प्रेम से है। यदि हमारा गलत स्वभाव है, तो हृदय ठीक नहीं होगा। विज्ञान के अनुसार हृदय की मरी हुई शिराएँ दुबारा नहीं बनती परन्तु इस कार्यक्रम ने यह चमत्कार किया है कि इसमें दुबारा नई शिराएँ बन गईं। ऐसे हृदयरोगी भी हैं जो 4 बार हृदयाघात होने पर भी अब तैरते हैं, कार चलाते हैं। चमत्कार की तरह से मौत के मुँह से निकल आए हैं।**

एक माता की धमनी 100% बन्द थी। जब दो साल बाद एन्जियोग्राफी कराई तो पाया कि पूरी धमनी खुल गई। उसने बताया कि मैं दिन में 150 बार चलते-फिरते अभ्यास करती थी कि सर्वोच्च सर्जन मेरा ऑपरेशन कर रहा है। हमने परिणाम यह पाया कि इस कार्यक्रम में सबसे ज्यादा फायदा राजयोग से हुआ, भोजन और व्यायाम का फायदा उससे कम हुआ। यह कार्यक्रम कहीं भी रह कर अपनाया जा सकता है। इसमें कोई खर्चा नहीं है। सात अप्रैल, 2004 विश्व स्वास्थ्य दिवस पर इस विशिष्ट ''स्वस्थ जीवनशैली कार्यक्रम'' को अहमदाबाद के टाऊनहाल में, एक सार्वजनिक सभा में कई प्रतिष्ठित चिकित्सकों और हृदयरोग विशेषज्ञों की सहभागिता से प्रारंभ किया गया। इस लोकार्पण के उपरांत हृदयशूल (Angina) और हृदयाघात (Heart Attack) से मुक्ति हेतु कार्यक्रम पंजीयन के लिए बड़ी संख्या में आवेदन एवं प्रार्थी आ रहे हैं। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपनी केस समरी, एंजियोग्राफी रिपोर्ट की फोटो कापी, चिकित्सक का निर्देश पत्र और साथ में अपना नाम व पता लिखा हुआ तथा पांच रुपये का पोस्टल स्टेम्प (टिकट) लगा लिफाफा निम्नलिखित पते पर भेज कर और अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अपना पत्र इस पते पर भेजें –

***

डॉ. सतीश गुप्ता
सीनियर कन्सलटेण्ट, कार्डियोलॉजी एवं मेडीसिन
ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर,
पोस्ट – शान्तिवन (आबू रोड़), राजस्थान - 307510
फोन: 02974–228101, 228129, **फैक्स**: 228116
E-mail – shantivan @ bkindia . com

एकाग्रता की शक्ति

– ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत

मन की एकाग्रता एक बहुत बड़ी शक्ति है। वैसे तो मन आत्मा की ही एक शक्ति है लेकिन मन में बहुत सारे तूफान उत्पन्न होते रहते हैं इसलिए हम कहते हैं कि मन बड़ा चंचल है। आत्मा, मन द्वारा सोचती है तथा बुद्धि द्वारा निर्णय लेती है। बुद्धि को ही अन्तरात्मा की आवाज़ कहते हैं। कई बार मन में उठने वाले तूफानों को शान्त करने की कोशिश में मन और बुद्धि में संघर्ष पैदा हो जाता है, इसे ही तनाव कहते हैं। इसका नतीजा यह निकलता है कि जो हम सोचना चाहते हैं वो सोच नहीं पाते हैं और जो नहीं सोचना चाहते वे विचार मन में तूफान मचाते हैं। इससे मुक्त होने के लिए एकाग्रता की शक्ति की आवश्यकता है जो आध्यात्मिक ज्ञान से प्राप्त होती है। आत्मा, परमात्मा और कर्मों के ज्ञान से हम एकाग्रता की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। आत्मा के ज्ञान से हम आत्मिक गुणों को अनुभव में ला सकते हैं। परमात्मा के ज्ञान के आधार से हम उनमें मन को लगा कर उनसे शक्ति प्राप्त कर सकते हैं, इसे ही राजयोग कहते हैं। कर्म सिद्धांत को जान कर कर्मों को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।

एकाग्रता की परिभाषा

अब प्रश्न उठता है कि एकाग्रता की परिभाषा क्या है और मन को एकाग्र कैसे करें ? किसी विशेष दिशा में मन को ले जाना और उसी अनुभूति में मन को टिकाना, यह है एकाग्रता। मन और बुद्धि को एक ही संकल्प देकर उसकी गहराई में जाना और उसका अनुभव करना, यह है एकाग्रता की शक्ति। मन और बुद्धि की एकाग्रता साधना के द्वारा ही आ सकती है। संकल्प शक्ति को एकाग्र करके हम अनेक चमत्कार जीवन में अनुभव कर सकते हैं। असंभव कार्य संभव हो सकते हैं। अनेक वैज्ञानिकों ने एकाग्रता के आधार पर अनेक आविष्कार किए हैं और हमारे लिए सुख के साधन बनाये हैं। एकाग्रता के लिए त्याग, वैराग्य और निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। स्थूल रूप से कुछ भी त्याग करने की आवश्यकता नहीं है। हम किसी से वैराग्य करके उससे दूर नहीं जा सकते क्योंकि यह कायरता हो जाती है। लेकिन संसार में रहते सब कुछ करते, कारोबार करते मन से वैरागी बनना है। हम जानते हैं कि संसार में सब कुछ विनाशी है, अल्पकाल के लिए है। विनाशी वस्तु में मोह रखना कितना बड़ा अज्ञान है। अत: मन को त्याग व वैराग्य की भावना से साधना में जुटा दें। इसका मतलब यह नहीं है कि हम मन को शून्य कर दें। एकाग्रता का अर्थ यह भी नहीं है कि हम मन को निरसंकल्प करके कुछ भी न सोचें। मन को शुद्ध संकल्प तो देने ही हैं। मन-बुद्धि की खुराक शक्तिशाली संकल्प हैं। अगर शक्तिशाली संकल्प नहीं होंगे तो व्यर्थ व अशुद्ध संकल्प अपने आप स्थान ले लेंगे। एकाग्रता की शक्ति तथा राजयोग की अनुभूति के लिए सबसे पहले हम अपने आपसे पूछते हैं कि हम कौन हैं ? उत्तर मिलता है कि हम आत्मा हैं, ज्योतिस्वरूप हैं, चमकता हुआ सितारा हैं, अजर-अमर-अविनाशी हैं, सत्य हैं, चैतन्य हैं, ज्योति का पुंज हैं। इस प्रकार, जैसे-जैसे हम मन को यह चिंतन देते जाते हैं वैसे-वैसे मन को हल्केपन की अनुभूति होती जाती है। हल्की चीज़ ऊपर उठती है। मन के हल्का होते ही हम देहभान से परे हो जाते हैं। फिर अनुभव होता है कि देह अलग है और मैं इससे भिन्न एक चमकता हुआ सितारा हूँ। भृकुटी के मध्य विराजमान होकर सारे शरीर की कर्मेन्द्रियों का संचालन कर रहा हूँ। मैं शरीर की इन्द्रियों के बंधन में नहीं हूँ। इस प्रकार, अभ्यास करने से एक ऐसी स्थिति

बन जाती है कि हम देखते हुए भी नहीं देखेंगे और सुनते हुए भी नहीं सुनेंगे। आँख-कान खुले होते भी हम मन के द्वारा सुन्दर अनुभूति में मग्न रहेंगे। जैसे, जब हम किसी गहन विचार में खोए होते हैं, उस समय कोई व्यक्ति बात करे तो अन्तरात्मा उसको ग्रहण नहीं करती है।

पवित्रता ही शान्ति की जननी है

एकाग्रता के द्वारा हम अनेक गुण व शक्तियाँ प्राप्त करते हैं। सबसे बड़ा है पवित्रता का गुण। जैसे-जैसे पवित्रता की अनुभूति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे अपवित्र विचार अपने आप हटते जाते हैं और जहाँ पवित्रता है वहाँ शान्ति तो है ही। पवित्रता ही शान्ति की जननी है। यदि मन में अपवित्र विचार होंगे तो कभी भी शान्ति का अनुभव नहीं होगा। पवित्रता का अर्थ है, हमारी दृष्टि, वृत्ति और भावनाओं में आत्मिक अनुभूति हो। खुद को भी हम आत्मा रूप में देखें और अन्य को भी आत्मा की ही दृष्टि से देखें, इसी को भाई-भाई की दृष्टि कहते हैं। आज दुनिया में भाई-भाई ही एक-दूसरे के दुश्मन बन गए हैं। इसका कारण है देह दृष्टि। देह के लिए जो पदार्थ चाहिएँ उनको देखते हैं लेकिन आत्मा को नहीं देखते। हम कहते हैं – 'हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, आपस में हैं भाई-भाई'। यदि हम आत्मिक दृष्टि अपनायेंगे तो सचमुच सभी भाई नज़र आयेंगे। जब हम समझेंगे कि वे भी परमपिता परमात्मा की संतान हैं तो मन बिल्कुल शान्त हो जाएगा। मन में प्रेम, शीतलता, आनन्द और शक्ति बढ़ती जाएगी, हम परमात्मा के निकट पहुँचते जायेंगे। परमात्मा पिता, रूप में बिन्दु और गुणों में सिंधु है। जैसे सैक्रीन की गोली बहुत छोटी होती है लेकिन मिठास से भरी होती है वैसे ही परमात्मा पिता में भी सभी संबंधों की मिठास भरी है। परमात्मा हमारा माता-पिता, बंधु-सखा, स्वामी, सतगुरु व परमशिक्षक है। जब बच्चा डर जाता है तो वह माँ की गोद में बैठ जाता है। उसे संतोष का अनुभव होता है, डर समाप्त हो जाता है। माँ की छत्रछाया व रक्षा का अनुभव होता है। इसी प्रकार, यदि मन में भय उत्पन्न हो तो उसी समय परमात्मा को माँ के रूप में देख,बच्चा बन कर उसकी गोद में चले जाओ। भगवान के बच्चे बन जायेंगे तो दुनिया की बुरी अनुभूति से बच जायेंगे। परमात्मा को पिता रूप में देखेंगे तो उनकी सम्पत्ति पर अधिकार हो जायेगा। महसूस होगा कि परमात्मा पिता के गुण ही मेरे गुण हैं। वे शान्ति, प्रेम, दया के सागर हैं तो मैं आत्मा भी इन गुणों का स्वरूप हूँ। फिर धीरे-धीरे आप इन गुणों की गहराई में जायेंगे, यही है एकाग्रता की शक्ति। जैसे इतना बड़ा सूर्य एक प्रतिबिंब के रूप में कितना छोटा बिन्दु बन जाता है लेकिन उसमें बड़ी शक्ति भरी होती है, उसी प्रकार सिंधु परमात्मा को बिन्दु रूप में अपने अन्दर समा लो। उस सागर को अपनी बुद्धि रूपी गागर में समा लेने से महसूस होगा कि मैं स्वयं भी शांति का स्रोत हूँ। शान्ति का टॉवर व शांति का लाइट हाउस हूँ। मुझसे शांति की किरणें चारों ओर फैल रही हैं, इससे खुद को भी लाभ होगा व समाज को भी। बस यही संकल्प आए, दूसरे संकल्प ना आएँ , फिर तीसरे नेत्र से ज्योतिबिन्दु परमात्मा को देखते-देखते उसमें समा जाएँ। ऐसा करने से उनके गुण आत्मा में भरते जाते हैं। जैसे अग्नि के निकट जाने से गर्मी लगती है उसी प्रकार परमात्मा के निकट पहुँचते ही उनके गुणों का आभास होने लगता है। जिसके अन्दर गुण होते हैं वह आकर्षित करता है और जिसके गुणों का हम चिंतन करते हैं उससे प्रेम अपने-आप बढ़ जाता है। तो ईश्वर के गुणों का चिंतन करते-करते हमें ईश्वरीय प्रेम का अनुभव होगा। हम प्रेम स्वरूप बन प्रेम की गंगा सारे विश्व में बहायेंगे। यही है एकाग्रता, यही है राजयोग और यही है जीवन की सफलता।

▲▲

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त पर विशेष –

स्वाधीनता – सपना या सच्चाई

– ब्रह्माकुमार पीयूष, दिल्ली

आज भारत देश को स्वतंत्र हुए आधी सदी से भी अधिक समय बीत चुका है लेकिन जो स्वप्न स्वतंत्रता सेनानियों ने इस देश के लिए देखा था उसके पूरे होने के कोई आसार नजर नहीं आते हैं। कई बार बुजुर्ग लोगों से सुनने को मिलता है कि ऐसी स्वतंत्रता से तो ब्रिटिश राज ही अच्छा था। भय से ही सही, कम-से-कम लोग काम तो करते थे। आज तो चारों ओर अराजकता का आलम है। कोई कार्य अथवा परियोजना समय से सम्पन्न नहीं होती है और परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र इम्तिहान से पहले ही लीक हो जाते हैं। विद्यालय में शिक्षकगण समय से नहीं पहुँचते हैं, दफ्तर में कोई भी फाइल बिना रिश्वत के आगे नहीं बढ़ती है, क्या यही सच्ची स्वतंत्रता है? कुल मिला कर ऐसा जान पड़ता है कि स्वाधीनता नाम के लिए तो प्राप्त हो गई है लेकिन व्यवहार में उसके कोई लक्षण नहीं दीखते हैं। स्वतंत्र होकर तो हमें विकास की बुलंदियों पर होना चाहिए था लेकिन कुछ क्षेत्रों को छोड़ दें तो प्रगति के नाम पर चहुँ ओर दिखावा और छलावा ही नजर आता है। आओ, स्वाधीनता दिवस के सुअवसर पर हम अपने अंदर झाँक कर देखें कि सच्ची स्वतंत्रता का सही भावार्थ क्या है –

1. नागरिकों का समग्र विकास हो – आज जो लोग धनी हैं वे और ही धनवान बनते जा रहे हैं जबकि निर्धन लोग दिनोंदिन गरीब होते जा रहे हैं। केवल कुछेक लोगों की मासिक आय में वृद्धि हो जाने से समस्त देश का कल्याण नहीं हो सकता है। स्वतंत्रता का वास्तविक भावार्थ है कि प्रत्येक नागरिक का समग्र विकास हो, उसे जीवन की सभी मूलभूत सुविधाएँ प्राप्त हों। महात्मा गाँधी जी ने एक बार कहा था कि सच्ची स्वतंत्रता तभी मानी जायेगी जब पंक्ति के अन्तिम छोर पर खड़े व्यक्ति के चेहरे पर भी प्रसन्नता की झलक हो लेकिन आज वस्तु-स्थिति इसके एकदम विपरीत है। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर यक्ष प्रश्न यह है कि कैसे समग्र क्राँति की लहर को देश के प्रत्येक गाँव तक ले जाया जाय। कैसे निर्धनतम् वर्ग को भी देश की मुख्य धारा से जोड़ा जाय और कैसे वंचितों को उनके अधिकार दिलाये जायें। इस लक्ष्य को यदि हम प्राप्त कर लेते हैं तो कहेंगे कि सच्ची स्वतंत्रता मिल गई है।

2. सच्चे रामराज्य की स्थापना हो – कहावत है कि रामराज्य में कोई भी नर-नारी किसी भी प्रकार से दुःखी नहीं था। बापू गाँधी जी ने भी स्वाधीनता के उपरांत भारत में ऐसे ही रामराज्य की परिकल्पना की थी। लेकिन परिणाम इसके उल्टे निकले। स्वतंत्र होकर हमारे उत्तरदायित्व और ही बढ़ गये हैं। आज हमें केवल अपने लिए ही नहीं सोचना है अपितु अपने समाज, देश और यहाँ तक कि समस्त विश्व को अपने समक्ष रखकर कार्य करना है। आज स्व-अनुशासित और स्वावलम्बी नागरिकों की ज़रूरत है जो कि आगे आकर देश का नेतृत्व कर सकें। ऐसी भावनाएँ यदि सभी देशवासियों की होंगी तो अवश्य ही भारत में रामराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी।

3. नारी जाति का सम्मान हो – आज नारी जाति सर्वाधिक असुरक्षित महसूस कर रही है। **यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता** – वाले देश में नारी को मात्र भोग्या माना जाना कदाचित स्वतंत्रता का निरादर ही है। महात्मा गाँधी जी ने एक बार कहा था कि एक पुरुष यदि शिक्षित होगा तो वह मात्र अकेला ही शिक्षित रहेगा

जबकि एक पढ़ी-लिखी महिला सारे परिवार को शिक्षित कर सकेगी। वास्तव में आज प्रत्येक महिला को सुशिक्षित और आम्म निर्भर बनाने की आवश्यकता है। जागरूक नारियाँ अवश्य ही देश को नई दिशा प्रदान कर सकेंगी और देश का भाग्य बदल सकेंगी।

4. युवाओं का चारित्रिक विकास हो व उनके अंदर देश भक्ति की भावना जाग्रत हो – आज हमारे देश में लोगों का बौद्धिक विकास तो हो रहा है लेकिन सच्चरित्र कम-से-कम होता जा रहा है, जो कि भारत जैसे गौरवशाली राष्ट्र के लिए शुभ लक्षण नहीं है। स्वाधीनता का सच्चा अर्थ है कि बौद्धिक और चारित्रिक दोनों ही प्रकार के विकास का सामंजस्य हो। एक मोटे अनुमान के अनुसार आज भारत के शीर्ष संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करके अधिकतर युवा विदेशों की ओर कूच कर जाते हैं। यदि हम प्रतिभा पलायन को रोकना चाहते हैं तो युवाओं के मन में देशभक्ति की भावना जाग्रत करनी होगी, उन्हें यह सिखाना होगा कि मात्र पैसा कमा लेना ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। प्रतिभाशाली और सिद्धांतवादी युवा यदि स्वदेश में ही रहेंगे तो अवश्य ही वे एक नई कार्य संस्कृति को जन्म देंगे। फलत: नवभारत और स्वर्णिम भारत का पुनर्निर्माण हो सकेगा।

5. प्रत्येक व्यक्ति कर्मयोगी हो – गीता में अर्जुन को बार-बार यही शिक्षा दी गई है कि हे अर्जुन! तुम कर्मयोगी बनो। वास्तव में गीता के कालजयी महावाक्यों को आज सभी भारतवासियों को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। आज हम पूर्णनिष्ठा से कार्य करें और फल ईश्वर के अधीन छोड़ दें। ऐसा करने से मन में विभिन्न प्रकार की शंकाएँ जन्म नहीं लेती हैं और व्यक्ति निश्चिन्त रहता है तथा उस कार्य का प्रतिफल भी श्रेष्ठ निकलता है। मानव को सर्वाधिक चिताएँ अपने भविष्य के विषय में ही होती हैं लेकिन कर्मयोगी व्यक्ति सदैव अपने भविष्य के प्रति आशान्वित रहता है, उसका दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक होता है।

स्वाधीनता दिवस के पावन पर्व पर हम सभी देशवासी बैठकर इस विषय पर सम्पूर्ण चिंतन करें कि क्यों इतना समय बीत जाने के बाद भी अपेक्षित परिणाम नहीं आये हैं। बापू के स्वप्नों का रामराज्य आखिर इतना समय गुजर जाने के बाद भी क्यों स्थापन नहीं हो पाया है। हम समझते हैं कि इसके लिए दृढ़ता और प्रतिबद्वता की महती आवश्यकता है। आज जब **बापू का भी बापू (शिव परमात्मा) इस धरा पर अवतरित हो चुका है और स्वर्ग की पुनर्स्थापना का भागीरथ कार्य प्रारम्भ हो चुका है तो हमें भगवान को सत्य रूप में पहचान कर उसके बताये मार्ग पर चलने की ज़रूरत है।** यदि हम परमात्मा के पथ पर सच्चे मन से चलेंगे तो निकट भविष्य में ही बापू गाँधी जी का रामराज्य का स्वप्न सच्चाई में अवश्य बदल जायेगा। सुधी पाठकों को स्वतंत्रता दिवस की सहस्त्र बधाइयाँ!

▲▲

केऊझर- ईश्वरीय सेवा की नई शाखा के उद्घाटन अवसर पर शिव ध्वजारोहण करते हुए उड़ीसा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता आई.एम. कुदुसी, ब्र.कु. सुलोचना बहन तथा अन्य ।

वेद चिंतन

– ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

वेद हमारी अति प्राचीन विद्या है। युगों तक वेद-विद्या के लिए भारतवासियों में अति सम्मान रहा। वेद-विद्या का अनुसरण लोगों को बुराइयों व विकर्मों से बचाने में सक्षम रहा। परन्तु कालान्तर में अनेक मत-मतान्तर आने से व इस महान विद्या के बारे में भी अनेक मत प्रचारित होने से मनुष्यों का भाव वेदों के प्रति कम होता गया। वेद , संस्कृत भाषा में होने के कारण वेद मन्त्रों के शब्दार्थ व भावार्थ को समझने में भी अनेक मतभेद होते रहे। परिणाम यह हुआ कि एक बड़ा जन समुदाय वेदों के विपरीत जाने लगा। वेदों पर ब्राह्मणों का अधिकार होने के कारण भी यह विद्या सर्वत्र न फैल सकी। क्योंकि ब्राह्मण धीरे-धीरे ब्राह्मणत्व से दूर होते गये, उनका जीवन वेदों के अनुकूल नहीं रह गया, इसलिए ब्राह्मणों में भी लोगों की आस्था नहीं रही।

आज की नव पीढ़ी को यदि देखें तो उनकी इन सब धार्मिक ग्रन्थों में कोई रुचि नहीं। भौतिकता का प्रकोप धर्म की शक्ति को लोप कर रहा है। ऐसे में कौन-सी विद्या मनुष्यात्माओं को पुन: उसके मूल स्वरूप में ले जा सकती है अथवा हमारी प्राचीन संस्कृति जो पाश्चात्य संस्कृति के बहते प्रवाह में अपनी दिशा खो चुकी है, कैसे पुन: स्थापित हो सकती है, इसका ही चिन्तन यहाँ प्रस्तुत है।

कुछ समय पूर्व एक आर्य विद्वान प्रोफेसर ज्ञान सरोवर में आये थे। उन्हें सब कुछ बहुत अच्छा लगा परन्तु मन में वेद सम्बन्धित प्रश्न थे, जो उन्होंने इस तरह पूछे। वे बोले कि आपका कार्य अति उत्तम है। आप नि:सन्देह मनुष्य को आर्य बना रहे हैं परन्तु आपने न तो कहीं वेदों की चर्चा की, न आपके यहाँ कहीं वेद मंत्र ही लिखे हैं। वे तो सत्य ज्ञान के ग्रन्थ हैं, उनका उल्लेख यहाँ क्यों नहीं....? हमने महाशय से पूछा ...क्या आप ये बता सकते हैं कि आपके शहर में कितने लोगों ने वेदों को देखा है? वे बोले – बहुत कम ने। फिर हमने पूछा कि उनमें से कितनों ने वेद अध्ययन किया है? उत्तर था, बहुत कम ने। हमने तीसरा प्रश्न किया कि उनमें से कितनों ने वेदों की शिक्षाओं को जीवन में अपनाया है? महाशय जी गम्भीर हो गये। हमने ही उत्तर दिया कि शायद किसी ने भी नहीं। महाशय ने अपनी मौन स्वीकृति प्रदान की।

तब हमने कहा कि जिन महान ग्रन्थों की समाज में मान्यता ही नहीं है, क्या उनके द्वारा विश्व कल्याण होगा? वेदों की उपस्थिति तो हज़ारों वर्षों से है। चार वेदों रूपी पहियों पर ठहरी हमारे राष्ट्र की गाड़ी पतन की ओर दौड़ रही है या उत्थान की ओर? हमारे घर में अच्छी-से-अच्छी चीज़ हो परन्तु कोई उसे उपयोग ही न करता हो, तो उसका प्रयोजन ही क्या? हम यह नहीं कह रहे हैं कि वेदों के ज्ञान की महत्ता कम है। हम तो यह कह रहे हैं कि उनका अनुपालन ही नहीं हो रहा है। आज के मनुष्य की विचारधारा कुछ और है, जो कि शास्त्रों के प्रतिकूल है।

फिर कैसे होगा विश्व का कल्याण? उन्होंने पूछा और कहने लगे कि वेद सम्पूर्ण ज्ञान के ग्रन्थ हैं, यदि उनसे ही जग कल्याण नहीं हुआ तो और कैसे होगा? यह सुन कर हमने उनसे एक गुह्य प्रश्न पूछा कि आपको मालूम होगा – तैत्तरिय उपनिषद् में लिखा है कि वेदों में मंत्रों की संख्या एक लाख है। वे बोले, ठीक है। तब हमने उन्हें याद दिलाया कि हमें केवल अस्सी हजार मंत्र ही प्राप्त हैं, 20 हजार अभी भी लोप हैं। उन्होंने स्वीकार किया। तब हमने कहा कि वेदों के सम्पूर्ण मंत्र ही प्राप्त नहीं हैं तब यह कैसे माना जाए कि वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान है। हमें क्या पता कि उन 20 हजार मंत्रों में क्या लिखा था। इस पर वे चुप हो गये। बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि हमारे पास सम्पूर्ण ज्ञान होता तो हमारा पतन न होता। अपूर्ण ज्ञान ने ही मनुष्य को अपूर्ण

बनाया है। तब ही तो ऋषियों ने अनेक बार नेति-नेति शब्द का प्रयोग किया क्योंकि वे जानते थे कि सम्पूर्ण योगयुक्त हुए बिना सम्पूर्ण ज्ञान को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

वेदों का ज्ञान कैसे प्रकाश में आया। अब हम इस पर चिन्तन करेंगे। इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम हम विद्वानों के कुछ विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। भगवती देवी शर्मा लिखती हैं, सर्व धर्मों के मूल में माने जाने वाले देव-संस्कृति के रत्न वेद हमारे समक्ष ज्ञान के पवित्र कोष के रूप में आते हैं। ईश्वरीय प्रेरणा से अन्तस्फुरणा के रूप में 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना से सराबोर ऋषियों द्वारा उनका अवतरण सृष्टि के आदि में हुआ। आचार्य शंकर ने महाभारत का श्लोक देते हुए कहा है – "सृष्टि के आदि में स्वयंभू के द्वारा उन्हीं वेदों को इतिहास के साथ अपनी तपस्या के बल पर प्राप्त किया गया।" द्रष्टाओं का मत है कि वेद ज्ञान पराचेतना के गर्भ में सदा से स्थित रहता है। परिष्कृत-चेतना सम्पन्न ऋषियों के माध्यम से वे प्रत्येक कल्प में प्रकट होते हैं। कल्पान्त में पुन: वहीं समा जाते हैं। ऐसी भी प्रसिद्धि है कि परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद के रूप में अपेक्षित ज्ञान का प्रकाश कर दिया। यह भी मान्यता है कि ऋषियों ने यह ज्ञान समाधि द्वारा परमात्म तत्व से एकाकार होकर पाया था। ऋषियों का ज्ञान, साक्षात्कार का ज्ञान है। ऋषियों ने वेद को पूर्ण तो कहा किन्तु उसके साथ नेति-नेति (यही अन्तिम नहीं है) भी कहा। पूर्णमिदं के साथ नेति-नेति भी कहना, उनके तत्वद्रष्टा और स्पष्टवक्ता होने का प्रमाण है। वेद में कहा है – ऋचाएँ परमव्योम में रहती हैं। जिसका देवत्व अपरिवर्तनीय है, जो उस अपरिवर्तनीय सत्य को नहीं समझता, उसके लिए मात्र ऋचा क्या करेंगी। निरुक्तकार यास्क ने भी वेद के लगभग 400 ऐसे शब्द गिनाये जिनका अर्थ उन्हें पता नहीं।जब शब्दार्थ का यह हाल है तो भावार्थ तो और भी गूढ़ होते हैं।

उपर्युक्त प्रसंग हमने श्रीमती भगवती देवी शर्मा द्वारा लिखित 'भूमिका' से उद्धृत किये हैं जो उन्होंने श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा ऋग्वेद के भाष्य के बारे में लिखी है। अब हम यहाँ दो तथ्यों पर विशेष रूप से चिन्तन करेंगे कि वेदों का ज्ञान कैसे प्रकाश में आया और क्या आज विद्वान,वेदों के भावार्थ को समझने में सक्षम हैं। क्या आज लोगों में वेदों के प्रति अरुचि है। यह चिन्तन हम उस ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर प्रस्तुत कर रहे हैं जो हमने स्वयं ज्ञान के सागर निराकार परमात्मा के द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से पाया है और जिस ज्ञान का हमने साधना की प्रयोगशाला में सम्पूर्ण सत्य के रूप में साक्षात्कार किया है। उन दिव्य अनुभवों के आधार से हम जानते हैं कि परमसत्य को अथवा सम्पूर्ण सत्य ज्ञान को तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि हम निरन्तर परमात्मा के स्वरूप में योगयुक्त न हों। क्योंकि ऐसी लम्बे काल की निरन्तर योगयुक्त अवस्था द्वारा ही बुद्धि सम्पूर्ण पवित्र व स्वच्छ बनती है। सम्पूर्ण पवित्र व दिव्य बुद्धि वाला मनुष्य ही सम्पूर्ण ईश्वरीय ज्ञान का अधिकारी है। केवल तीक्ष्ण बुद्धि वालों को या तार्किक बुद्धि वालों को यह अधिकार नहीं मिलता। वेद-ज्ञान के बारे में जो यह मान्यता है कि ऋषियों ने इसे ऊँच समाधि अवस्था में अन्तर्स्फुरणा के द्वारा प्राप्त किया। पहले हम इस पर विचार कर लें। सहज भाषा में हम यों कहेंगे कि ऋषि जब ध्यानमग्न हुए तो उन्हें परमात्म-प्रेरणाएँ प्राप्त हुईं जो उन्होंने लिखीं। कुछ विद्वानों का मानना है कि बन्द आँखों में ही लिखा और बाद में मन्त्र द्रष्टा ऋषियों ने उनकी व्याख्या की।

इसमें कोई संदेह नहीं कि वे ऋषि ऊँच कोटि के साधक थे, अति पवित्र भी थे। परन्तु हम अनुभवों से जानते हैं कि अन्तर्स्फुरणा से प्राप्त प्रेरणाएँ सदा ही सम्पूर्ण सत्य नहीं होती। उसमें मनुष्य के अपने भाव सम्मिलित होते ही हैं। हम देख सकते हैं कि यदि किसी गुह्य विषय पर किसी विद्वान ने 15 मिनट वक्तव्य दिया और उसे

100 लोगों ने सुना हो, तो बाद में जब वे उसे व्यक्त करेंगे तो कम-से-कम 10 भेद तो हो ही जायेंगे। जब कानों से सुनी हुई बातों को समझने में भी अन्तर पड़ जाता है तब भला अन्त:प्रेरणा को कोई सम्पूर्ण रूप से कैसे ग्रहण कर सकता है। प्रेरणा से सम्पूर्ण सत्य तक नहीं पहुँचा जा सकता। यही कारण रहा कि ऋषियों के मतों में भेद पैदा हो गये और सभी ने अपने को सम्पूर्ण सत्य माना। सत्य क्या है? सम्पूर्ण सत्य वही बता सकता है जो स्वयं सम्पूर्ण है व परमसत्य हैं। वह है स्वयं निराकार, ज्ञान के सागर, ज्योति स्वरूप परम आत्मा। यह तो सभी मानते हैं कि सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ज्ञान दिया। ब्रह्मा के द्वारा ही दिया – यह भी मान्यता है, इसलिए ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाए हैं। **"ऋचाएँ परमव्योम में रहती हैं", व्योम (आकाश) के बारे में तो सभी जानते हैं, परन्तु यह परमव्योम क्या है? इसका स्पष्टीकरण किसी आचार्य ने नहीं किया। हमने इसे ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा जाना। व्योम से परे ब्रह्मलोक है, जिसे परमधाम भी कहते हैं, जहाँ आत्माएँ मुक्ति में रहती हैं, वही परम आत्मा का भी निवास स्थान है। ज्ञान परमात्मा के पास रहता है। इसी को** इन शब्दों में कह दिया है कि ऋचाएँ **परमव्योम में रहती हैं।** वेद मन्त्रों को ऋचाएँ व श्रुति भी कहा जाता है। परमात्मा ने ज्ञान सृष्टि के आदि में दिया। इस पर भी ज़रा विचार कर लें। सृष्टि का आदि कब था? सृष्टि तो अनादि है। इसमें पांच युगों का चक्र चलता ही रहता है। सृष्टि की आदि सतयुग के पूर्व के समय को ही कहा जाता है। सतयुग में देव-संस्कृति थी और कलियुग अन्त में अदैव संस्कृति, असुर संस्कृति थी। दोनों के मध्य परमात्मा स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर सत्य ज्ञान देते हैं और असुर संस्कृति को देव संस्कृति में बदल देते हैं।

एक अति गुह्य रहस्य पर सभी ध्यान दें कि कलियुग के अन्त में निराकार परमात्मा जब ज्ञान देकर देव संस्कृति की स्थापना करते हैं तो कलियुग का महाविनाश हो जाता है अर्थात् असुर संस्कृति लोप हो जाती है व प्राय: सभी आत्माएँ मुक्त होकर परमव्योम (ब्रह्मलोक) में लौट जाती हैं। यहीं पर परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान भी लोप हो जाता है, परन्तु अनेक मनुष्यात्माओं के अन्तर्मन , जिसे विद्वान पराचेतना कहते हैं, में वह ज्ञान सूक्ष्म रूप से अंकित हो जाता है और बाद में जब ये ही मनुष्यात्माएँ ऋषि रूप में स्थिरचित्त होती हैं तो वह ज्ञान अन्तर्स्फुरणा के रूप में प्रकट होता है। परन्तु उसका कुछ अंश लोप ही रह जाता है। तो हमें जानना चाहिए कि ज्ञान का मूल स्रोत तो ज्ञान के सागर निराकार परमात्मा ही हैं और उनके बिना कोई भी मनुष्य सम्पूर्ण सत्य को प्राप्त नहीं कर सकता। दूसरी मुख्य रहस्यमयी बात यह भी है कि जिन ऋषियों ने वेद मन्त्रों की रचना की है, उनका मानसिक स्तर, पवित्रता का स्तर, बौद्धिक स्तर व अध्यात्म का स्तर बहुत ऊँच कोटि का था, जबकि आज के विद्वानों का या आचार्यों का यह स्तर काफी कम है। यदि हम प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रदत्त मन्त्रों का सही अर्थ जानना चाहते हैं तो हमें अपने स्तर को उन जैसा ही महान बनाना पड़ेगा। केवल पांडित्य से सम्पूर्ण सत्य को नहीं जाना जा सकता। हमने वेदों के बारे में कुछ चिन्तन प्रस्तुत किया। यदि सचमुच हम वेद-विद्या को समाज में प्रसारित करना चाहते हैं तो हमें इसे अति सरल व व्यवहारिक रूप देना होगा। आज जो मनुष्य यज्ञ-हवनों की, शास्त्रों की बातें कर रहे हैं, उनका जीवन शास्त्र अनुकूल हो। केवल उपदेश का स्थाई प्रभाव नहीं पड़ता। इसमें भी ब्राह्मणों को ब्राह्मणत्व में स्थित होकर आगे आना होगा। **सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि अब हम पुन: कलियुग के अन्त व सतयुग के आदिकाल के संगम पर हैं। परमात्मा पुन: सम्पूर्ण ज्ञान दे रहे हैं, देव संस्कृति की स्थापना कर रहे हैं, मनुष्य में छुपे देवत्व को जगा रहे हैं। आप आइये और स्वयं परम-सत्य वेदों व शास्त्रों का सार जान लीजिए।** ❑❑

एक पत्र – शरीर के नाम

ब्रह्माकुमारी लावण्या, वारंगल (आ.प्र.)

कहा जाता है कि प्यार से पत्थर भी पिघल जाता है। संसार के सभी मानव, जंतु, पक्षी आदि प्यार ही चाहते हैं और प्यार से एक-दूसरे का सहयोग प्राप्त करते हैं। प्रकृति और प्रकृति से बना शरीर भी प्यार ही चाहता है। आत्मा अपने मूल संस्कारों को देह के आधार से ही प्रकट करती है। पाँच तत्वों से बने इस शरीर के बिना आत्मा द्वारा पार्ट बजाना असंभव है। समय पर शरीर आत्मा को सहयोग दे, स्वस्थ रहे, यह भी भाग्य की बात है। अगर शारीरिक बीमारियाँ देह को अस्वस्थ और कमजोर बना देती हैं तो आत्मा के पुरुषार्थ में बाधा पड़ जाती है। लेकिन ऐसे समय में भी शरीर को चलाना तो पड़ता ही है, उससे सेवा तो लेनी ही होती है। तो जैसे किसी व्यक्ति से काम कराना हो तो हम प्यार से उससे बातें करते हैं, ऐसे ही अगर हम प्यार से अपने शरीर रूपी घोड़े से बातें करें और उसे समझायें तो अवश्य ही हमें उसका संपूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। सोलह कलाओं में पत्र-व्यवहार भी एक कला है। ब्रह्मा बाबा भी पत्रों के द्वारा बच्चों के प्रति अपना प्यार प्रकट करते थे। तो क्यों न हम अपने शरीर को भी प्यार से भरपूर पत्र लिखें –

हे मेरे तन,

मैं जानता हूँ कि तुम बहुत अस्वस्थ और थके हुए हो। तुम्हारे अंग शक्तिहीन होते जा रहे हैं। परंतु हे मेरे तन, मुझे तुम पर नाज है। तुमने मुझे सदा पुरुषार्थ में सहयोग दिया है। मेरी हार-जीत का आधार बने हो। कई बार तुमने खुद की परवाह न करते हुए मेरा साथ दिया है। मैं तुम्हें इसके लिए अनगिनत बार शुक्रिया अदा करता हूँ। भाग्यवान हूँ मैं आत्मा, भाग्यवान हो तुम (शरीर), जो 84वें जन्म में हमारा संयोग हुआ और हमें संयुक्त रूप में भगवान ने पसंद किया। तुम भगवान की नज़रों में पड़ गए। इतने वर्षों के ईश्वरीय जीवन में, तुमने कितनी परमात्मा की सेवा की है! ईश्वरीय सेवा का मीठा मेवा भी तुम्हें मिला है। तुम्हारे इस मुख ने अनेकों को ईश्वरीय संदेश दिया। इन हाथों ने यज्ञ-सेवा की है। ईश्वरीय सेवा निमित्त तुमने संपूर्ण समर्पण किया है और संसार के झूठे आकर्षण छोड़ संपूर्ण पवित्र जीवन अपनाया है। मेरे आदर्शों को तुमने मान दिया है। मेरे इरादों पर चलने के लिए राज़ी हुए हो। निश्चित ही तुम मेरे सच्चे मित्र हो। मेरा तुमसे केवल इतना ही अनुरोध है कि संगमयुग की इन अमूल्य घड़ियों में, प्रभुमिलन के अनुपम क्षणों में, बेहद सेवा की इस अंतिम वेला में थोड़ा और सहन करके मुझे सहयोग दो। इस अंतिम जन्म में, कयामत के समय तक तुम अथक शरीर बन जाओ।

तुम्हारा सच्चा स्वामी,

आत्मा

वडनगर- आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. कुसुम बहन ।

भाग्यविधाता ने मुझे कौड़ी से हीरा बना दिया

– ब्रह्माकुमार सुरजन सिंह, बस्सी (जयपुर)

मेरा लौकिक जन्म एक छोटे-से गांव में साधारण किसान परिवार में जुलाई, 1957 में हुआ। पैतृक गाँव में कोई भी सार्वजनिक मंदिर न होने के कारण लौकिक घर में नियमित रूप से पूजा-पाठ, भक्ति आदि की कोई परिपाटी नहीं रही। माताजी में संत-महात्माओं की सेवा करने व उनके प्रवचन सुनने के संस्कार थे। उनके व्रत-उपवास के दौरान ही हमें भक्ति से जुड़ी कहानियाँ सुनने को मिलती थीं और सभी प्रकार के घरेलू कार्य की शिक्षा भी उन्हीं से मिली। पिताजी पुलिस सेवा में, घर से दूर रहते थे और महीने में 1-2 दिन के लिए घर पर आते थे। उस दौरान भी उनके पास बैठने या उनसे खुलकर बात करने का सौभाग्य नहीं मिलता था। मेरी हर जरूरत माँ के द्वारा ही पूरी होती थी। पिताजी में शराब पीने की आदत होने के कारण माँ मुझे बचपन से ही इस दुर्व्यसन से दूर रहने की सलाह देती रहती थी। मात्र 17 वर्ष की आयु में परिवारजनों ने शादी कर दी व पढ़ते-पढ़ते 19 वर्ष की आयु में लौकिक चाचाजी की मेहरबानी से मेरी पुलिस सेवा में नौकरी लग गई। तब तक के जीवन में सिनेमा देखने की आदत के सिवाय अन्य कोई बुरी आदत नहीं पड़ी थी।

कुसंग का पतनकारी रंग – पुलिस सेवा में लगने के बाद एक तो मैं घर से दूर हो गया और परिवारजनों के भय से मुक्त हो गया और दूसरा, सेवासाथियों के कुसंग के बुरे रंग में रंग गया। इस कारण शराब-मांस-धूम्रपान आदि का चस्का लग गया। शाम को शराबी सेवासाथियों या ऐसे ही दोस्तों के साथ बैठकर शराब पीना मेरी दिनचर्या हो गई। कभी-कभी दोस्तों के ज़िद्द करने पर, ना-नुकर करते भी, नशे के अधीन अनैतिक कार्यों में लिप्त भी हो जाता था। घर पर महीने में 1-2 दिन के लिए ही जाता था, उस दौरान भी बंधन महसूस होता था क्योंकि परिवारजनों के समक्ष धूम्रपान नहीं कर सकता था। माँ तो तब भी मुझे एकदम पाक-साफ समझती थी परंतु मुझे अपनी माँ के साथ विश्वासघात करने का अहसास अवश्य होता था। समय बीतता गया और दो पुत्रियों व एक पुत्र का जन्म हुआ। पढ़ने लायक होने पर उनको मैं अपने साथ रखने लगा। फिर एक पुत्री का और आगमन हुआ।

भगवान का बुलावा – मुझे अपने परिवार व संबंधियों के बजाय दोस्तों पर अधिक विश्वास व गर्व रहता था तथा उनके हर कर्म में तन-मन-धन से जिगरी सहयोग करता था। बस्सी थाने में सेवारत रहते हुए दोस्तों के सहयोग से बस्सी में ही छोटा-सा स्वयं का मकान बन गया। मकान से थोड़ी दूर पर ही एक अध्यापक के घर के एक हिस्से में ब्रह्माकुमारी आश्रम था। उन अध्यापक के घर जब घरेलू कार्य से मेरा कभी जाना होता था तब भी तथा कई बार वे हमारे घर आकर भी आश्रम पर आने व ज्ञान सुनने का आग्रह किया करते थे। परंतु मेरे मन में ''ओमशांति'' के बारे में कुछ भ्रांतियाँ थीं। दूसरा, तामसिक खान-पान से तमोगुणी बनी बुद्धि ने भी वहां जाने की व सत्य को जानने की मुझे कभी अनुमति नहीं दी। धीरे-धीरे शराब सेवन से तन-मन-धन की हानियों की महसूसता मुझे आने लगी तथा अन्तरात्मा इनसे मुक्त होने के लिए प्रेरित भी करने लगी परंतु व्यसनों के गर्त में इतना धंस चुका
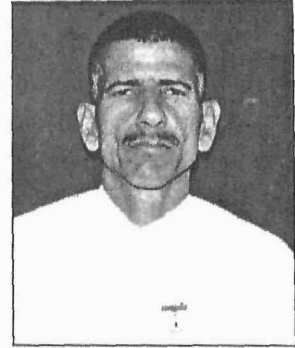
था कि बाहर निकलने के विचार उत्पन्न करने की शक्ति भी नहीं बची थी। अन्तरात्मा की आवाज को तमोगुणी बुद्धि भी दबा देती थी परंतु मुक्तेश्वर परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से बंधनों से मुक्त होने का रास्ता निकल ही आया।

एक बंदी ने मेरी बंद आँखें खोल दी – मार्च, 1995 में, पुलिस थाने में मेरी रात्रि ड्यूटी के दौरान एक बंदी (मुजरिम) भाग गया। मुझे अपने कर्त्तव्य में लापरवाही के आरोप में सेवा से निलंबित कर दिया गया। मैं पांच मास तक निलंबित रहा। उस दौरान काफी मानसिक व आर्थिक परेशानियों से गुजरा। मैंने अपने बहुत से दोस्तों से सहयोग की अपेक्षा रखी पर किसी से भी सहयोग नहीं मिला। इससे मेरे विश्वास को गहरा आघात पहुँचा। मुझे लगा कि मेरा सब कुछ लुट गया है और मैं खाली हाथ अकेला हूँ। धीरे-धीरे कुछ हिम्मत बटोर कर मैंने नया जीवन जीने की जिज्ञासा स्वयं में जगाई तथा दिल से महसूस किया कि उस बंदी ने मेरी बुद्धि की बंद आँखें खोलकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। समय ने पलटा खाया, वह बंदी भी पकड़ में आ गया तथा मैं अपनी ड्यूटी पर पुन: बहाल हो गया। अब पक्का ठान लिया कि पुराने दोस्तों का साथ छोड़ दूँगा। परंतु नया जीवन कैसे शुरू करूँ, उसके लिए कोई स्पष्ट राह नजर नहीं आ रही थी। दोस्तों के बिना जीवन सूना-सूना लगने लगा। मन ही मन भगवान से विनती करता था कि मुझे भविष्य के लिए राह दिखाओ और पुराने नारकीय जीवन से बचाओ। भगवान का मुझे तो कोई यथार्थ परिचय था नहीं परंतु उसकी नजर मुझ पर अवश्य पड़ चुकी थी।

खुदा दोस्त मिल गया – जुलाई, 1996 में रोजाना की भांति एक दिन शाम को मैं अपनी ड्यूटी से घर आया तो मेरी युगल ने कहा कि आज ओमशांति आश्रम की बहनजी ने मुझे, आपको साथ लेकर शाम को आश्रम पर ज्ञान सुनने के लिए आने को कहा है। मैंने तुरंत ही दिल से हाँ कर दी। आश्रम पर बहनजी (ललिता बहन) ने हमें बाबा के चित्र के सामने बिठाया तथा दो मिनट परमात्मा को याद करने के लिए कहा। परमात्मा को याद करने की कोई विधि तो मालूम नहीं थी परंतु बैठते ही शांति की अनुभूति हुई जो पहले जीवन में कभी भी नहीं हुई थी। फिर ''आत्मा'' का विस्तार से परिचय सुना। **जैसे ही जाना कि ''आप शरीर नहीं बल्कि इससे भिन्न एक अजर-अमर-अविनाशी, ज्योतिस्वरूप-शांतस्वरूप आत्मा हो'' तो अंदर में एक अलौकिक शक्ति का संचार होता महसूस हुआ व लगा कि मस्तक में सारी शक्ति इकट्ठी हो गई है। घर जाने पर रात्रि में तथा अगले दिन अपनी ड्यूटी पर भी अंदर में एक शक्ति का प्रवाह लगातार बना रहा। दूसरे दिन शाम को परमात्मा का सत्य परिचय मिला तो बाबा के चित्र से सुखद किरणें मस्तक पर आती हुई अनुभव हुईं। एक असीम प्राप्ति व तृप्ति का अहसास हुआ। दिल ने कहा कि मुझ आत्मा को सही ठिकाना व सच्चा खुदा दोस्त मिल गया है, अब कहीं भटकने की जरूरत नहीं है। इस प्रकार असीम प्राप्तियों की अनुभूति के साथ साप्ताहिक कोर्स पूरा हुआ। उसके बाद बाबा की मीठी ज्ञान-मुरली ने मन को मोह लिया। पहले दिन सुनने पर ही यह पक्का निश्चय हो गया कि ये शब्द किसी इंसान के नहीं, स्वयं परमात्मा के ही हैं और रोजाना सुनने की पक्की ठान** लीं। शुरू से ही अमृतवेले का योग आश्रम पर जाकर करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिससे असीम शक्तियाँ प्राप्त होने से जीवन में एकदम ही परिवर्तन आने लगा। सभी व्यसन एक झटके में ही छूट गये। ईश्वरीय महावाक्यों में जब पहली बार पता चला कि ''सिनेमा'' पाप की माँ है तो उसी दिन से सिनेमा नहीं देखने का व्रत ले लिया। शुरू-शुरू में तो लोगों को यह विश्वास ही नहीं हुआ

कि मैं शराब भी कभी छोड़ सकता हूँ परंतु सच्चाई को प्रत्यक्ष करने के लिए प्रमाण देने की जरूरत नहीं, वह तो समय पर स्वत: ही सिद्ध हो जाती है। **''मिल गया, पाना था सो पा लिया, अब कुछ भी पाना बाकी नहीं रहा'' यह अनहद गीत अंदर बजने लग गया।** ईश्वरीय धारणाओं पर चलने से एवं ज्ञान-योग से आत्मा भरपूर होने से जल्दी ही मार्च 1997 में होली पर मधुबन (आबू पर्वत) में भगवान से मिलने का अवसर भी मिल गया। मधुबन में अनेक प्राप्तियों एवं वरदानों से भरपूर होकर लौटते ही शरीर की अनेक व्याधियाँ परीक्षा रूप में हिलाने के लिए आईं। करीब दो महीने बिस्तर पर विश्राम करना पड़ा। कई दिनों तक अन्न नहीं खाने व लगातार नींद नहीं आने से शरीर काफी कमजोर हो गया। यह देख कई मित्र-संबंधियों ने पुन: शराब का थोड़ा-थोड़ा सेवन करने की सलाह दी परंतु ऐसा करने का तो स्वप्न में भी ख्याल नहीं आया। प्यारे बाबा के साथ और सहारे से उस परिस्थिति में भी रूहानी खुशी में कोई कमी नहीं आई। **एक बल एक भरोसे तथा सत्य की राह पर चलने वाले ''आत्म-दीप'' को अनेक तूफान भी नहीं बुझा सके व धीरे-धीरे सभी बीमारियों ने विदाई ले ली।**

दृष्टि, वृत्ति, कृति निर्विकारी बन गई – ईश्वरीय जन्म से ही बाबा ने निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त बना दिया। तामसिक खान-पान से जर्जर हुआ शरीर परमात्मा के यज्ञ की सेवा में लगने से व भगवान की याद में बनाया हुआ शुद्ध-पवित्र ब्रह्मा भोजन खाने से अब एकदम स्वस्थ है। हर वर्ष एक बार बापदादा से सम्मुख मिलन मनाने व 1-2 बार बेहद सेवार्थ मधुबन जाने का मौका अवश्य मिलता है। **हर परिस्थिति, हर तूफान को खेल समझ साक्षी होकर देखने का अनुभव होता है। बाबा ने ट्रस्टी बनाकर बैलेन्स से चलना सिखा दिया जो कभी संकल्प में भी गृहस्थी का बोझ महसूस नहीं होता। लौकिक और अलौकिक सभी कार्य बाबा की श्रीमत लेकर ही करता हूँ जिससे निश्चित रूप से सफलता मिलती रहती है।** लौकिक परिवार भी करीब-करीब बाबा का बन गया है, बाकी भी स्नेही, सहयोगी, संतुष्ट हैं। बाबा से मिले अखुट खजानों को पाकर आत्मा दिल से बाबा का शुक्रिया गाती है कि मुझ कौड़ी तुल्य को हीरे-तुल्य बना दिया। विनाशी नशे से जो दृष्टि-वृत्ति-कृति दिनों-दिन विकारी बनती जाती थी वही अब रूहानी नशे में रहने से दिनों-दिन पवित्र बनती जा रही है। अब तो यही शुभ भावना, शुभ कामना रहती है कि मेरे जैसी अनेकों आत्मायें, जो विषय-सागर में गोते खा रही हैं, वे भी आने वाले महाविनाश से पहले प्यारे बाबा (परमपिता परमात्मा) को जान जायें और अपना खोया हुआ सुख-शांति-पवित्रता का अधिकार उनसे प्राप्त कर लें।

देहली (जैतपुर)- निगम पार्षद बहन सीता शर्मा तथा भ्राता शर्मा जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. ऊषा बहन ।

करनकरावनहार की कमाल

– ब्रह्माकुमार विष्णु, गोपालगंज (बिहार)

मैं मार्च, 2003 से ही एक अति महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत कार्य के सम्पन्न न होने से बहुत चिंतित रहा करता था। जायज होते हुए भी मेरे कार्य में अनावश्यक विलम्ब हो रहा था और मुझे सफलता संदिग्ध लगने लगी थी। समय व्यर्थ जा रहा था। मैं दु:ख और उदासी का भी अनुभव करने लगा था। कोई मददगार नजर नहीं आ रहा था।

एक दिन मैंने सोचा कि मैं अमृतवेले प्यारे बाबा से योग भी लगाता हूँ, मुरली भी नित्य सुनता हूँ, कार्य के बीच में से समय निकाल कर भी करनकरावनहार शिव बाबा की याद में रहता हूँ। याद से प्राप्त होने वाले प्रत्यक्ष फल एवं भविष्य फल का भी अनुभवी हूँ फिर भी मेरे जीवन में दु:ख, उदासी और असफलता क्यों है ? बहुत चिन्तन के बाद मुझे लगा कि मेरे योगाभ्यास में ही शायद कोई त्रुटि रह जाती है। मैंने हर त्रुटि को मिटाने का दृढ़ संकल्प लिया और सोचा कि मैं अब सर्वस्व भूल कर, उस परमज्योति परमात्मा को स्पष्ट रूप से बुद्धि रूपी नेत्र से निहारूँगा और अपने साथ हो रहे अन्याय के बारे में सब बता दूँगा। अगली सुबह अमृतवेले हाथ-मुँह धोकर, पूर्ण समर्पित भाव से प्रेम एवं अटूट विश्वास के साथ बाबा की याद में बैठ गया। पिछले दिन के अमृतवेले की भेंट में उस दिन याद में मन एकदम शान्त रहा। आन्तरिक दृष्टि-पटल पर ज्योतिर्बिन्दुस्वरूप शिव बाबा बिल्कुल स्पष्ट दिखाई पड़ते रहे। मैं अपनी समस्या भूल, मंत्रमुग्ध हो उन्हें देखता रहा। मेरे मन, बुद्धि बड़ी तेजी से बाबा की ओर खिंचते रहे। मैं उनकी महिमा और उपकारों के सागर में गोते लगाता रहा। पर यह क्या ? मैं चकित रह गया। ज्ञान-नेत्र के समक्ष उपस्थित ज्योतिर्बिन्दु, छोटे सफेद प्रकाश के घेरे में बदल गया। यह प्रकाश का घेरा, एक दूसरे सुनहरे प्रकाश के घेरे से घिर गया। इसके बाद क्रमश: लाल प्रकाश का, फिर नीले प्रकाश का घेरा सजता गया। अद्भुत दृश्य था। भिन्न-भिन्न रंगों वाले प्रकाश के ये घेरे धीरे-धीरे यों हिल रहे थे मानो धीरे-धीरे लहरें उठ रही हों। मन में अद्भुत रोमांच एवं अपार प्रसन्नता की स्फुरणा करने वाली गोलाकार प्रकाश पट्टियों के बीच घिरा श्वेत ज्यातिर्बिन्दु शोभायमान हो रहा था। मेरी आँखें मानो बँध कर रह गई। मेरे मन-बुद्धि की ऐसी एकाग्रता पहली बार हुई। क्षण भर बाद सब कुछ अदृश्य हो गया, बचा केवल पहले जैसा ज्योतिर्बिन्दु बाबा। मेरी हालत विचित्र थी। मैं सारी चिन्ताओं को भूल कर अतीन्द्रिय आनन्द, आत्मबल एवं अपार शक्ति की अनुभूति से झूम उठा। सुबह हुई। मुरली क्लास में भी अतीन्द्रिय आनन्द मन को गुदगुदाता रहा। दिन भर, अमृतवेले के अलौकिक दृश्य ने हृदय तथा मस्तिष्क को प्रसन्न बनाए रखा। शाम 5 बजे मेरे एक सहकर्मी आये और बोले, आपका काम हो गया है, यह लीजिए आदेश-पत्र और लाख रुपये का ड्राफ्ट। मेरे मुख से अनायास ही निकला – वाह, बाबा वाह! धन्य हो गया मैं, हे करनकरावनहार! खुशी में आँखें छलक पड़ी। पर ड्राफ्ट और आदेश-पत्र के लिए नहीं बल्कि बाबा के अमृतवेले के अद्भुत दृश्य की स्मृति से।

★★★

दिव्य गुण

कोई भी फसल उगानी हो तो पहले भूमि तैयार करनी पड़ती है। इसी प्रकार योगाभ्यास के लिए भी मन रूपी भूमि को दिव्य गुणों, नियमों और मर्यादाओं से तैयार करना पड़ता है। मुख्य गुण हैं – धैर्य, संतोष, सहनशीलता, मधुरता और करुणा। जिसमें ये गुण अधिक मात्रा में होंगे उसका उतना ही अधिक योग लगेगा। ▲▲

सम्पूर्ण पवित्र एवं..........पृष्ठ 01 का शेष

काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार, जिन्हों का उस समय समस्त भू-मण्डल पर अखण्ड राज्य था, को ज्ञान-तलवार तथा योग के कवच के प्रयोग से जीता था। इसी के फलस्वरूप उन्होंने भविष्य में सृष्टि के पवित्र हो जाने पर, सतयुग के आरम्भ में श्री कृष्ण के रूप में अटल, अखण्ड और अति सुखकारी तथा दो ताजधारी स्वर्गिक स्वराज्य तथा पूज्य देव पद प्राप्त किया था। इससे हमें यह बोध होता है कि **ज्ञान-यज्ञ ही सभी यज्ञों में से श्रेष्ठ है। ज्ञान-दान ही सर्वोत्तम दान है। विकारों को जीतना ही सबसे बड़ा युद्ध करना है और मनुष्यमात्र को सदाचारी एवं श्रेष्ठ तथा योगयुक्त करना ही सर्वोच्च सेवा करना है और इस सर्वोत्तम ज्ञान-यज्ञ, दान, सेवा तथा युद्ध का अमोलक अवसर संगमयुग में ही मिल सकता है जबकि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर सत्य ज्ञान देते हैं।**

परन्तु लोगों ने श्री कृष्ण का जन्म द्वापर युग में बताकर तथा ''उनके जीवन-काल में भी कंस, शिशुपाल, महाभारत युद्ध, रोग आदि हुए'', ऐसा कहकर श्री कृष्ण पद की महिमा को बहुत कम कर दिया है। उन्होंने यह कहकर कि ''श्री कृष्ण की 16108 रानियाँ थीं...... उन्होंने गोपियों के चीर हरण किए थे'' आदि-आदि, श्री कृष्ण पर मिथ्या कलंक आरोपित किए हैं और श्री नारायण पद को अपमानित कर दिया है। पुनश्च, कहीं भी इस बात का उल्लेख नहीं है कि श्री कृष्ण ने वह जीवनमुक्त देव पद कैसे प्राप्त किया था ? इन दोनों बातों का परिणाम यह हुआ है कि भारतवासी हर वर्ष जन्माष्टमी मनाने, प्रतिदिन मन्दिरों में श्री कृष्ण की पूजा करने, सैंकड़ों बार श्री कृष्ण की जीवन-कथा सुनने के बावजूद भी अपने जीवन को दिव्य नहीं बना पाये और उन्हें यह भी मालूम न होने के कारण कि वर्तमान समय कौन-सा है तथा भविष्य में कौन-सा समय आने वाला है, वे अज्ञान-निद्रा में सोये पड़े हैं तथा पुरुषार्थहीन हैं।

अब यदि उन्हें यह सत्यता मालूम हो जाए कि वर्तमान समय ही कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम समय है जबकि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पुन: गीता-ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और कि निकट भविष्य में श्री कृष्ण का सच्चा, दैवी स्वराज्य शुरू होने वाला है और श्री कृष्ण तो सोलह कला सम्पूर्ण पवित्र एवं मर्यादा पुरुषोत्तम थे तो वे भी अब इस ज्ञान तथा योग की धारणा करेंगे तथा भविष्य में श्री कृष्ण के दैवी एवं स्वर्गिक स्वराज्य में देव पद प्राप्त करने का पुरुषार्थ करने लगेंगे जैसे कि इस ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा इन रहस्यों को समझने वाले हज़ारों-लाखों नर-नारी यह सर्वोत्तम पुरुषार्थ करके अपने जीवन को पावन बनाकर हर्ष प्राप्त कर रहे हैं। ❑❑

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- योग शिविर के पश्चात् देहली के रवि भाई, उनका लौकिक परिवार तथा मित्र-सम्बन्धी, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा ब्र.कु. सरला बहन समूह चित्र में।

1. देहली (मजलिस पार्क)- डॉक्टर्स स्नेह-मिलन कार्यक्रम में समूह चित्र में हैं धर्मार्थ हॉस्पिटल के अध्यक्ष भ्राता संतराम गुप्ता, ब्र.कु. डॉ. गुप्ता जी, वरिष्ठ मनोवैज्ञानिक डॉ. भ्राता राजेश जी, ब्र.कु. अमृता बहन, ब्र.कु. शिवानी बहन, ब्र.कु. राजकुमार भाई तथा अन्य । 2. रामपुर- इस्लाम धर्मावलम्बियों के रूहानी स्नेह-मिलन कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं शहर इमाम मौलवी मुफ्ती महमूद, सर्व धर्म एकता मंच अध्यक्ष भ्राता सय्यद अब्दुल्ला तारिक, ब्र.कु. मनोरमा बहन तथा ब्र.कु. पार्वती बहन । 3. सहारनपुर- स्टार पेपर मिल्स प्रा. लि. के प्रबन्धक तथा उप-प्रबन्धक तनाव मुक्त जीवन विषयक कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. अनीता बहन तथा अन्य के साथ समूह चित्र में । 4. जमखण्डी- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए भ्राता मुत्तीनकण्ठ स्वामी जी, ब्र.कु. अम्बिका बहन, मीरा बहन तथा अन्य । 5. बुढ़ाना- शाहपुर गीता पाठशाला के उद्‌घाटन अवसर पर मंच पर विराजमान हैं नगराध्यक्ष भ्राता राजेश बंसल, ब्र कु. जयन्ती बहन, ममता बहन तथा अन्य । 6. कन्नौज (नखाशा)- राजयोग शिविर में सम्बोधित करती हुईं ब्र.कु. सावित्री बहन । साथ में ब्र.कु. विद्या बहन तथा अन्य । 7. द्वारिका (सेक्टर 7)- चेतना जागृति संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ईश्वरीय संदेश देती हुईं डॉ. बहन कमलेश जी । साथ में ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य । 8. अडूर (केरल)- महिला स्नेह-मिलन कार्यक्रम का उद्‌घाटन करती हुईं लायनेस अध्यक्षा बहन मोली थामस, सनोप अध्यक्षा बहन वनीता तथा अन्य ।

1. फर्रुखाबाद (अढ़तियान)- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पी.सी.एफ. के प्रदेश अध्यक्ष भ्राता छोटे सिंह, भाजपा समाज कल्याण प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्षा डॉ. बहन रजनी सरीन, ब्र.कु. मंजू बहन तथा अन्य । **2. सीतापुर**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई सरस्वती विद्या मन्दिर प्रबन्धिका बहन सरस्वती, ब्र.कु. सुमित्रा बहन तथा अन्य । 3. विजयानगरम्- नगरपालिका आयुक्त भ्राता जोन सेमसन, ब्र.कु. रत्ना बहन, जेड.पी. अध्यक्षा बहन बी. जान्सी लक्ष्मी गारु तथा ब्र.कु. अन्नपूर्णा बहन आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज के उद्घाटन अवसर पर ईश्वरीय स्मृति में । 4. देहरादून- मसूरी के विधायक भ्राता जोत सिंह घनसोला, नगर पंचायत परिषद के अध्यक्ष भ्राता मनमोहन सिंह मल तथा अन्य को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. मंजू बहन । **5. खापा (कामठी)**- गुरू गंगाधर स्वामी जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. विजया बहन । **6. अलापुझा**- आध्यात्मिक स्नेह-मिलन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिरिक्त ज़िला तथा सत्र न्यायाधीश भ्राता वी.के. केसवन । साथ में ब्र.कु. नीलिमा तथा दिशा बहन । **7. चेन्नई**- राजयोग साधना शिविर का उद्घाटन करते हुए भ्राता सुब्रह्मण्यम भाई, गुरुनाथन भाई, दुर्गा प्रसाद भाई तथा ब्र.कु. रामनाथ भाई । **8. देहली (मधु विहार)**- विधायक भ्राता धर्मदेव सोलंकी का स्वागत करती हुई ब्र.कु. रूपा बहन । **9. विदर (पावन धाम)**- आज़ादी बचाओ आन्दोलनकारी भ्राता राजीव दीक्षित को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मंगला बहन । **10. मिरयालगुडा**- उप-पुलिस अधीक्षक भ्राता एम. लक्ष्मीनारायण को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शकुन्तला बहन ।
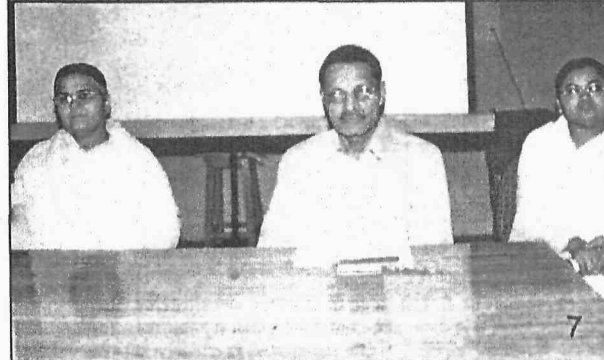
1. **नागरकोविल (तामिलनाडू)**- तनाव प्रबन्धन कोर्स के बाद पुलिस निरीक्षक भ्राता पी. शंकर नारायणन, ब्र.कु. कोकिला बहन, पुलिसकर्मी तथा अन्य समूह चित्र में । 2. **बेलगाँव-वडगाँव (कर्नाटक)**- मातेश्वरी स्मृति दिवस कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. मीनाक्षी बहन, ब्र.कु. अम्बिका बहन, राज्य महिला संगठन सेक्रेटरी बहन मीनाक्षी एस. नेलगलि तथा अन्य । 3. **येल्लापुर**- नागरिकता प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन के बाद बी.एड. कालेज के प्राचार्य भ्राता टी.एस. रवि, विद्यार्थीगण तथा ब्र.कु. पदमा बहन समूह चित्र में । 4. **लखीमपुर खीरी**- तनाव मुक्ति कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ज़िलाधिकारी भ्राता एस.पी. त्रिपाठी, मुख्य विकास अधिकारी भ्राता राजमणि यादव, अपर ज़िलाधिकारी भ्राता भगवान सिंह तथा ब्र.कु. सावित्री बहन । 5. **रायबरेली (बछरावा)**- राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए इण्टर कालेज के संस्थापक भ्राता जे.पी. मिश्रा, प्राचार्य भ्राता भगवान कुमार अवस्थी, भ्राता अंजनी कुमार पाण्डे, ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य। 6. **मदुरई**- व्यापार तथा उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए भ्राता मुथुरमन प्रबन्धक सलाहकार । ब्र.कु. शान्ता बहन तथा अन्य मंच पर विराजमान हैं । 7. **देहली (इस्ट पटेल नगर)**- तनाव प्रबन्धन कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं प्राचार्य डॉ. भ्राता राजेन्द्र सिंह, ब्र.कु. प्रकाश तथा ब्र.कु. राजश्री बहन । 8. **बरेली**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता संतोष कुमार गंगवार, ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. पार्वती बहन तथा अन्य ।

1. आगरा (पीपल मण्डी)- श्रीश्री108 शिवानन्द महाराज का स्वागत करती हुईं ब्र.कु. पारसमणि बहन । **2. सोनभद्र**- एन.टी.पी.सी. ओबरा के महाप्रबन्धक भ्राता हरिपाल सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सुमन बहन । **3. इटावा (जसवन्त नगर)**- ब्लाक प्रमुख बहन सरोज यादव को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. मंगला बहन । साथ में हैं ग्राम प्रधान शकुन्तला बहन । **4. कानपुर (हंस पुरम)**- उ.प्र. विधान परिषद के सभापति भ्राता सुखराम सिंह का स्वागत करती हुईं ब्र.कु. ज्योति बहन । **5. नवाबगंज**- विधायक भ्राता नरेन्द्र सिंह यादव को ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. विनीता बहन । **6. देहली (पालनपुर)**- नोबा दुग्ध डेयरी के प्रबन्धक भ्राता कुलदीप सनूजा तथा अन्य को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. राधा तथा ब्र.कु. कृष्णा बहन । **7. फर्रुखाबाद (ओम निवास)**- महाविद्यालय अध्यक्ष डॉ. भ्राता जितेन्द्र सिंह यादव को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. शोभा बहन । **8. महोबा**- ज़िला जज तथा उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. मंजू बहन । **9. बड़ौत**- सर्व हितकारी भारद्वाज आश्रम के संस्थापक भ्राता ईश्वर जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रामकुमार भाई । **10. आगरा (सेक्टर 7)**- जेल मंत्री भ्राता सूरजभान साक्या को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सरिता बहन । **11. देहली (संगम विहार)**- बी.एस.एफ. के डी.आई.जी. भ्राता शास्त्री जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. आशा बहन । **12. देहली (नरेला मण्डी)**- विधायक भ्राता चरण सिंह कण्डेरा जी, एस.एच.ओ. भ्राता महिपाल सिंह को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. सुरेश भाई ।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : bkatamad1@sancharnet.in **Ph. No. (02974)- 228125** **theworldrenewal@yahoo.co.in**

1. सिरसी (कर्नाटक)- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं कर्नाटक विधान परिषद के अध्यक्ष भ्राता वी.आर. सुदर्शन जी तथा पूर्व मंत्री भ्राता जयनाथ जी । ब्र.कु. वीणा बहन सम्बोधित करते हुए । **2. कोल्हापुर (दापोली)**- ज्ञान-चर्चा के बाद कुलपति भ्राता शंकरराव मगर, ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई, ब्र.कु. राऊत, ब्र.कु. विट्ठल भाई तथा अन्य समूह चित्र में । **3. जम्मू (रिहाड़ी)**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए जम्मू-कश्मीर के पर्यटन मंत्री भ्राता जुगल किशोर शर्मा, ब्र.कु. अचल बहन, मेयर भ्राता कबिन्द्र गुप्ता, ब्र.कु. निर्मल बहन तथा अन्य । **4. जबलपुर (नेपियर टाउन)**- मध्यप्रदेश विधान सभा अध्यक्ष भ्राता ईश्वरदास रोहाणी ईश्वरीय कार्य के प्रति अपने विचार लिखते हुए । साथ में हैं ब्र.कु. भावना बहन तथा अन्य । **5. हिरियूर (कर्नाटक)**- राजयोग शिक्षा केन्द्र के नवनिर्मित भवन का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. बसवराज भाई, कर्नाटक के ग्रामीण प्रभाग के मंत्री भ्राता वी. सत्यनारायण तथा अन्य । **6. राजकोट**- समाज सेवकों के आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. प्रेम भाई, सांसद डॉ. भ्राता बल्लभ भाई कथीरिया, सरगम क्लब के प्रमुख गुणवंत भाई डेलावाला तथा ब्र.कु. भारती बहन । **7. पाटन (जबलपुर)**- मध्यप्रदेश के लोक निर्माण विभाग के राज्यमंत्री भ्राता अजय विश्नोई को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. पुष्पा बहन । **8. रूद्रपुर**- उत्तरांचल के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री भ्राता तिलकराज बहेड़ को ईश्वरीय स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित करती हुईं ब्र.कु. सूरजमुखी बहन।

Regd.No. 10563/65, Postal Regd. No.RJ/WR/25/12/2003 2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

आबू पर्वत (ओमशान्ति भवन)- चिकित्सा प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए डॉ. भ्राता बनारसी शाह, प्रसिद्ध सर्जन डॉ. भ्राता वी.एन. श्रीखण्डे, ब्र.कु. भ्राता गिरीश पटेल, डॉ. भ्राता मुकेश पटेल, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. मुन्नी बहन, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर भाई तथा डॉ. भ्राता अशोक मेहता।

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- धार्मिक प्रभाग द्वारा आयोजित डॉयलाग तथा राजयोग शिविर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मोहन सिंघल, गुरुद्वारा रामदास सिंह सभा के अध्यक्ष सरदार हरचरण सिंह, ब्र.कु. रामनाथ भाई, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, रूहानी पीर मुहम्मद तालिब शिवपुरी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, सिद्ध बाबा रामअवतार जी तथा ब्र.कु. कविता बहन।

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- कला तथा संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मराठी फिल्म अभिनेत्री बहन वर्षा उचगांवकर, ब्र.कु. ऊषा बहन, राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा तथा अन्य भाई-बहनें ।

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- खेल प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा, ब्र.कु. शशि बहन, अन्तर्राष्ट्रीय महिला क्रिकेट टीम की प्रबन्धक बहन नूतन गावस्कर, कैप्टन बहन मिताली राज तथा ब्र.कु. जगबीर भाई ।